मूल्य : 20/- पंजीकरण संख्या : UPMUL/2016/76974 डाक पंजीकरण संख्या : UP/GBD- 249/2020-2022

वर्ष : ५ जुलाई : २०२१, विक्रमी सम्वत् : २०७८ सृष्टि सम्वत् : १९६०८५३१२२, दयानन्दाब्द : १९८ अंक : ७३

ओ३म्

॥ कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ॥

सत्य और ज्ञान से भरपूर आर्यसमाज नोएडा का मासिक मुखपत्र

विश्ववारा संस्कृति

मानवीय जीवन मूल्यों की संरक्षक पत्रिका

"सा प्रथमा संस्कृतिर्विश्ववारा"

नमो ब्रह्मणे नमस्ते वायो त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि। त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्म वदिष्यामि ऋतं वदिष्यामि सत्यं वदिष्यामि। तन्मामवतु तद्वक्तारमवतु। अवतु माम्। अवतु वक्तारम्॥

ईश्वर का व्यापक ज्ञानस्वरूप पूज्य और सहज स्वभाव जानकर हम उसकी उपासना करें तथा जीवन में सदा सत्य का आचरण करें।

मंगल पांडे
जयंती : 19 जुलाई

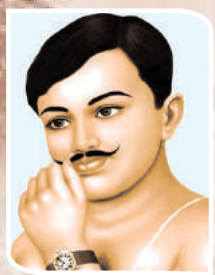

चंद्र शेखर आजाद
जयंती : 23 जुलाई

बाल गंगाधर तिलक
जयंती : 23 जुलाई

युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती
1824-1883 ईस्वी सन्
1881-1940 विक्रमी सम्वत्

स्वतंत्रता आंदोलन की क्रांति का जनक आर्यसमाज : आचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार

स्वामी कर्मवीर जी को 'विश्ववारा संस्कृति' पत्रिका भेंट करते प्रबंध संपादक आर्य कै. अशोक गुलाटी जी।

आर्ष गुरुकुल नोएडा के ब्रह्मचारीगण आसन करते हुए।

ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण के CEO श्री नरेन्द्र भूषण जी (IAS) एवं Covid fight officer Govt of india श्री लव अग्रवाल जी (IAS) से मुलाकात करते आर्ष गुरुकुल नोएडा के आचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार, उपाचार्य ओमकार शास्त्री व अन्य गणमान्य लोग।

ओ३म्

॥ कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ॥

विश्ववारा संस्कृति

मानवीय जीवन मूल्यों की संरक्षक पत्रिका

संरक्षक
श्री आनंद चौहान, श्री सुधीर सिंघल
प्रधान
श्री शैलेन जगिया

प्रबंध संपादक
आर्य कै. अशोक गुलाटी
संपादक
आचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार
सह संपादक
आचार्य ओमकार शास्त्री

प्रकाशक और मुद्रक
स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक डॉ. जयेन्द्र कुमार द्वारा वत्स ऑफसेट, मुद्दा हाऊस, सी-ब्लॉक, बारात घर, चौड़ा रघुनाथपुर, सेक्टर-22, नोएडा से मुद्रित एवं आर्य समाज, बी-69, सेक्टर-33, नोएडा, गौतमबुद्धनगर से प्रकाशित किया।

पंजीकरण संख्या : UPMUL/2016/76974

घोषणा पत्र संख्या : 153/2016-17, Postal Registration No.- UP/GBD- 249/2020-2022
Date of Dispatch 12 Every Month

मूल्य

एक प्रति	: 20/-	वार्षिक	: 250/-
पांच वर्ष	: 1100/-	आजीवन	: 2500/-

विदेश में शुल्क : 3100/-

अनुक्रमणिका

क्रम सं.	विषय	पृष्ठ
1.	संपादकीय : स्वतंत्रता आंदोलन की...	4
2.	जीवन का उद्देश्य...	5
3.	वर्षा ऋतु और वेद...	6–7
4.	सूर्य नमस्कार एवं मुसलमानों की...	8–9
5.	ऋषि दयानन्द ने चार वेदों को ईश्वर...	10–11
6.	वेदों मे वर्णित दुष्प्रवृत्ति उन्मूलन	12
7.	देशभक्तिः	13
8.	महापुरुषों को नमन...	14–15
9.	कोरोना अवतार...	16
10.	प्रभु के योग्य स्वयं बनें...	17
11.	समाचार-सूचनाएं	24
12.	सुस्वास्थ्य : कोरोना मरीजों को दिल...	26

पाठकवृंद : कृपया स्वयं समाज एवं राष्ट्र के उत्थान के लिए 'विश्ववारा संस्कृति' के आजीवन सदस्य बनकर जीवन पथ को पुष्पित, प्रफुल्लित और प्रमुदित करें। आपका चित्र पत्रिका में प्रकाशित होगा। आपके बहुमूल्य सुझावों का हम स्वागत करते हैं।

लेखकवृंद से अनुरोध है कि रचना मौलिक एवं अप्रकाशित हो, रचना का लेखन स्पष्ट और सुपाठ्य हो। दो प्रतियां उस रचनाकार को भेज दी जाएगी, जिनकी रचना प्रकाशित हुई है।

विज्ञापन दर

पिछला कवर पृष्ठ	:	10,000 रुपये
कवर पृष्ठ नं.-2	:	7000 रुपये
कवर पृष्ठ नं.-3	:	5000 रुपये
पूरा पृष्ठ अंदर	:	2500 रुपये
आधा पृष्ठ अंदर	:	1500 रुपये

'विश्ववारा संस्कृति' में सभी पद अवैतनिक हैं। प्रकाशित विचारों से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र गौतमबुद्धनगर होगा।

संपादकीय कार्यालय

आर्य समाज, बी-69,
सेक्टर-33, नोएडा- 201301
गौतमबुद्धनगर, (उ.प्र.)
दूरभाष : 0120-2505731,
9871798221, 7011279734
9899349304
captakg21@yahoo.co.in

Web : www.noidaaryasamaj.org, E-mail : info.aryasamajnoida33@gmail.com

संपादकीय...

।।ओ३म्।।

स्वतंत्रता आंदोलन की क्रांति का जनक आर्यसमाज

आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती परिपूर्ण दृष्टिकोण के स्वामी हैं, उनकी पारखी नजरों से कुछ भी छिपा न रहा। गुरु विरजानन्द के श्रीचरणों में विद्याध्यन के पश्चात महर्षि ने वेद प्रचार का कार्य आरम्भ किया। आर्य समाज की स्थापना की, जगह-जगह घूमते हुए उन्होंने बहुत बारीकी से देश की समस्याओं को समझा। उन्होंने महसूस किया कि यदि देश आज गुलाम है तो उसका मुख्य कारण इस देश के लोग खुद हैं।

महर्षि दयानन्द ने देखा कि देश में मूर्तिपूजा, जातिवाद, छुआछूत, ऊंच-नीच, अविद्या आदि में देश के लोग बुरी तरह से फंसे हुए हैं। महर्षि स्वामी दयानन्द ने समाज में व्याप्त सभी कुरीतियों के खिलाफ कड़े प्रहार किये तथा देश की जनता को जागरूक किया। परिणाम स्वरूप 1857 की क्रांति में ऋषि दयानन्द सरस्वती ने स्वयं योगदान किया था। उसके बाद 1875 में आर्य समाज की स्थापना के साथ आजादी का आंदोलन प्रखर होता चला गया। देश को आजाद कराने में सर्वाधिक योगदान महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती एवं उनके आर्य समाजी शिष्यों का रहा।

शाहजहांपुर की धरती पर 11 जून 1897 में रामप्रसाद बिस्मिल का जन्म हुआ। आर्य समाज शाहजहांपुर में स्वामी सोमदेव जी की प्रेरणा से देश भक्ति के भावों से ओतप्रोत होने वाले बिस्मिल ने देश को आजाद कराने का संकल्प लिया। अंग्रेजों को भयभीत करते हुए कहते थे-

'सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है।
देखना है जोर कितना बाजुये कातिल में है॥

राम प्रसाद बिस्मिल, लाला लाजपत राय, भगत सिंह, राजगुरु, अशफाक उल्ला खां आदि हजारों क्रातिकारियों ने आर्य समाज से प्रभावित होकर देश की आजादी की लड़ाई लड़ी। आर्य समाज के लोगों ने देश की आजादी के लिए जेलें भर दी, अपना सब कुछ कुरबान कर दिया। इसलिए मैं गर्व से कह सकता हूं देश को स्वतंत्र कराने में आर्य समाज की भूमिका सबसे अग्रणी रही।

जय महर्षि दयानन्द! जय आर्यसमाज!!

■ **आचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार**

आर्य समाज का सामाजिक सुधार में योगदान

भारत जब आजाद नहीं हुआ था उस समय देश में कई कुरीतियां और अन्य सामाजिक बुराइयां देश में फैली हुई थीं। इन बुराइयों और कुरीतियों को दूर करने के लिए कई नेताओं ने तरह-तरह के आंदोलन चलाए जिनका मकसद था समाज में फैली कुरीतियों को दूर करना। ऐसे ही आंदोलन और कार्यक्रम की शुरुआत स्वामी दयानन्द सरस्वती ने की थी। आर्य समाज एक हिन्दू सुधार आंदोलन है जिसकी स्थापना स्वामी दयानन्द सरस्वती ने की थी। यह आंदोलन पाश्चात्य प्रभावों की प्रतिक्रिया स्वरूप हिंदू धर्म में सुधार के लिए प्रारंभ हुआ था। आर्य समाजी शुद्ध वैदिक परम्परा में विश्वास करते थे तथा मूर्ति पूजा, अवतारवाद, बलि, झूठे कर्मकाण्ड व अंधविश्वासों को अस्वीकार करते थे। इसमें छुआछूत व जातिगत भेदभाव का विरोध किया गया तथा स्त्रियों व शूद्रों को भी यज्ञोपवीत धारण करने व वेद पढ़ने का अधिकार दिया गया था। स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा रचित 'सत्यार्थ प्रकाश' नामक ग्रन्थ आर्य समाज का मूल ग्रन्थ है। आर्य समाज का आदर्श वाक्य है- कृण्वन्तो विश्वमार्यम्, जिसका अर्थ है - विश्व को आर्य बनाते चलो। आर्यसमाज की स्थापना 10 अप्रैल सन 1875 को बम्बई में दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज की स्थापना की। उन्नीसवीं शताब्दी के तीसरे चरण में भारत में जागृति के जो चतुर्दिक आंदोलन आरंभ हुए, उनमें आर्य समाज का बड़ा महत्वपूर्ण स्थान है।

जीवन का उद्देश्य

आर्य कै. अशोक गुलाटी
प्रबंध संपादक

हमारे मन में कई प्रकार के विचार जीवन को लेकर उठते हैं, जीवन क्या है? इसका उद्देश्य क्या है? अंतिम सार क्या है? जो जीवन मिला है किसलिए मिला है। सबसे पहले तो कहें कि जन्म और मृत्यु के काल को जीवन कहा जाता है। इस काल में हमें यह जानना आवश्यक है कि वह परमेश्वर कौन है, कैसा है व क्या करता है? उसके नाम पर बड़ी अनभिज्ञताएं हैं, परमात्मा ने संसार क्यों बनाया है? मनुष्य को जीवन क्यों दिया, बहुत सारे प्रश्न उठते हैं।

परमात्मा को लेकर संसार में बहुत से विवाद हैं? प्रश्न बहुत हो सकते हैं, अन्तर भी बहुत हो सकते हैं, पर अध्यात्म के जगत में वे ही प्रवेश कर पाते हैं, जो परि प्रश्न हो जाते हैं। परि प्रश्न के द्वारा ही उसे जाना जा सकता है, समझा जा सकता है। परि प्रश्न नाम है जिज्ञासा का अर्थात् जानने की तीव्र इच्छा! श्रद्धा से परिपूर्ण जिज्ञासा का नाम है परि प्रश्न कि किससे पूछें, किससे परि प्रश्न करें, किससे जिज्ञासा करें? क्योंकि प्रारम्भ पूछना ही होता है और जिससे पूछते हैं, जिज्ञासा करते हैं, उसे ही गुरु कहा गया है, उसे ही आचार्य कहा गया है। पर वह गुरु, वह आचार्य तत्वदर्शी हो, श्रोत्रिय हो, ब्रह्मनिष्ठ हो। तद् विज्ञानार्थं स गुरुं एवं अहमगच्छे समित्पाणि-श्रोत्रियं ब्रह्म-निष्ठम् - मुण्डकोपनिषद 1.2.12 कहा भी है, अर्थात्- उसे जानने के लिए, वह जिज्ञासु श्रोता शिष्य बनकर अपने हाथ में समिधा लेकर श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ गुरु के पास जाय। सत्संग, आध्यात्मिक संगोष्ठियां ऐसे जिज्ञासुओं के लिये विकल्प स्वरूप हैं। इसलिए सत्संगों, अध्यात्म सभाओं में हम शिष्य बनकर पहुंचें, समित्पाणि होकर पहुंचे अर्थात जिज्ञासु होकर पहुंचे। समित्पाणि होना सर्मपण और सेवा का प्रतीक है। तीन समिधाएं- तन-मन व आत्म समर्पण ये तीन समिधाएं हैं जिन्हें प्रतीक स्वरूप शिष्य गुरु को समर्पित करता है। आत्म शिष्य का श्रद्धावान, तत्परायण और संयमी होना आवश्यक है और योगेश्वर श्रीकृष्ण गीता में भी लिखते हैं- श्रद्धावान, लभते ज्ञानं तत्पर: सतेन्द्रिय: गीता- 4-39

हम तब उसे जान पाते हैं, जो देवों का देव है, जो वसुओं का वसु है, जो अदभुत मित्र है, जो सच्चिदानन्द स्वरुप परमात्मा है। ये जिन्दगी उसी की है, जो प्रभु का हो गया...। यदि हम स्वयं पात्र बनकर पहुचेंगे तो उसे प्राप्त किए बिना वापस नहीं लोटेंगे, उसे जाने बिना नहीं रहेगें क्योंकि जीवन का सार यही है हम उस परमपिता परमात्मा को पालें और वह हमें मिल जाए। यही मानव जीवन का उद्देश्य है।

ईश्वर की सच्ची प्रार्थना से हमारा अंर्तमन खुश होता है। ईश्वर से प्रीति लगाना ही अंतिम सत्य है। क्योंकि मोक्ष पाने का एक मार्ग यही है। ब्रह्म की प्राप्ति ही जीव का परमलक्ष्य है। ब्रह्म सर्वत्र परिपूर्ण है उसी में जीव आनन्दपूर्वक गति से सर्वत्र विचरता है तो उस स्थिति को मोक्ष कहते हैं। जब शुद्ध मन युक्त पांच ज्ञानेन्द्रियं जीव के साथ रहती हैं और बुद्धि का स्थिर निश्चय होता है, उसको मोक्ष कहते हैं।

मोक्ष प्राप्त करने के लिए जीवात्मा अपने शुभ कर्मों द्वारा ऐश्वर्य के संचय के लिए मनुष्य योनी में आता है। सत्यभाषण, परोपकार, सत्यज्ञान, उपासना द्वारा मानसिक रूप से परमात्मा के समीप रहना, उसी से प्रकाश और प्रेरणा लेकर सब कार्य करना आदि कार्यों से जीव मोक्ष प्राप्ति के लिए आवश्यक पूंजी संग्रह करने में समर्थ होकर अपने चरम और परम लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल हो जाता है। परमेश्वर की प्राप्ति से जीव को जो असीम आनन्द प्राप्त होता है, वही सचमुच स्वर्ग है। मोक्ष की स्थिति में ही यह स्वर्ग जीव को प्राप्त होता है। मनुष्य मात्र का कर्तव्य है कि वह धर्म ज्ञान, विद्या द्वारा अपने आप आत्मा को जाने, पुन: परमात्मा की प्रेरणा प्रकाश में रहते रहते और तद्नुसार आचरण व्यवहार करने से निश्चित रूप से मोक्ष की प्राप्ति होगी। शुभ कर्मों की पूंजी ही हमें मोक्ष प्राप्त करा सकती है।

■ **मन की सच्चाई और अच्छाई कभी व्यर्थ नहीं जाती। ये वो पूजा है जिसकी खोज ईश्वर खुद करते हैं।**

■ **जिस भाव में, जिस विचार से जीओगे, जीवन उसी का स्वरूप बन जायेगा।**

वर्षा ऋतु और वेद

डॉ. विवेकआर्य

वर्षा ऋतु का आगमन हो गया है। भीष्म गर्मी के पश्चात वर्षा का जल जब तपती धरती पर गिरता है। तो गर्मी से न केवल राहत मिलती है। अपितु चारों ओर जीवन में नवीनता एवं वृद्धि का समागम होता हैं। वेदों में वर्षा ऋतु से सम्बंधित अनेक सूक्त हैं। जैसे पर्जन्य सूक्त (ऋग्वेद 7/101,102 सूक्त), वृष्टि सूक्त (अथर्ववेद 4/12) एवं प्राणसूक्त (अथर्ववेद 11/4) मंडूक सूक्त (ऋग्वेद 7/103 सूक्त) आदि।

पर्जन्य सूक्त मेघ के गरजने, सुखदायक वर्षा होने एवं सृष्टि के फलने-फूलने का सन्देश देता हैं। जबकि मंडूक सूक्त वर्षा ऋतु में मनुष्यों के कर्तव्यों का प्रतिपादन करता हैं। लेख में मंडूक सूक्त के 10 मंत्रों में बताये गए आध्यात्मिक, सामाजिक और शारीरिक लाभों पर प्रकाश डालेंगे। मंडूक शब्द को लेकर कुछ विदेशी विद्वानों ने परिहास किया हैं। उनका कहना था कि जब सूखा पड़ता है। तब कुछ ब्राह्मण तालाब के निकट एकत्र होकर मेंढक के समान टर्र-टर्र कर वेदों के इस सूक्त को पढ़ते हैं। जबकि अनेक विदेशी लेखकों जैसे ब्लूमफील्ड और विंटरनित्ज ने इसके व्यवहार अनुकूल व्याख्या करते हैं।

विंटरनित्ज लिखते है-'ग्रीष्म ऋतु में मेंढक ऐसे निष्क्रिय पड़े रहते हैं जैसे मौन का व्रत किये हुए ब्राह्मण। इसके अनन्तर वर्षा आती है मंडूक प्रसन्नता-पूर्वक टर्र-टर्र के साथ एक दूसरे का स्वागत करते हैं। जैसे कि पिता-पुत्र का। एक मंडूक दूसरे मंडूक की ध्वनि को इस प्रकार दोहराता है, जैसे शिष्य वेदपाठी ब्राह्मण गुरु के मंत्रों को। मंडूकों के स्वरों के आरोह व अवरोह अनेक प्रकार के होते हैं। जिस जिस सोमयाग में पुरोहित पूर्ण पात्र के साथ ओर बैठकर गाते हैं, ऐसे ही मंडूक अपने गीतों से वर्षा ऋतु के प्रारम्भ मनाते हैं।'

विदेशी लेखक मंडूक से केवल मेंढक का ग्रहण करते है। जबकि आर्य विद्वान पंडित आर्य मुनि जी मंडूक से वेदानां मण्डयितार: अर्थात वेदों को मंडन करने वाले ग्रहण करते हैं। वर्षा ऋतु के साथ श्रावणी पर्व का आगमन होता है। इस पर्व में मनुष्यों को वेद का पाठ करने का विधान हैं। इस पर्व में वेदाध्ययन को वर्षा आरम्भ होने पर मौन पड़े मेंढक जैसे प्रसन्न होकर ध्वनि करते है। वेद कहते है कि हे वेदपाठी ब्राह्मण वर्षा आरम्भ होने पर वैसे ही अपना मौन व्रत तोड़कर वेदों का सम्भाषण आरम्भ करें।

मंडूक सूक्त के प्रथम मन्त्र का सन्देश ईश्वर के महत्व गायन से वर्षा का स्वागत करने का सन्देश है। इस सूक्त के अगले चार मन्त्रों में सन्देश दिया गया है कि गर्मी के मारे सूखे हुए मंडूक वर्षा होने पर तेज ध्वनि निकालते हुए एक दूसरे के समीप जैसे जाते हैं, वैसे ही हे मनुष्यों तुम भी अपने परिवार के सभी सदस्यों, सम्बन्धियों, मित्रों, अनुचरों आदि के साथ संग होकर वेदों का पाठ करो। जब सभी समान मन्त्रों से एक ही पाठ करेंगे तो सभी की ध्वनि एक से होगी। सभी के विचार एक से होंगे। सभी के आचरण भी श्रेष्ठ बनेंगे। गुरुकुल में विद्यार्थी गुरु के पीछे एक समान मन्त्रों को दोहरायें। गृहस्थी पुरोहित के पीछे दोहरायें। वानप्रस्थी और संन्यासी भी अपने वेदपाठ द्वारा समाज को दिशानिर्देश दे। इन मन्त्रों का सामाजिक सन्देश समाज का संगतिकरण करना है। यह सामाजिक सन्देश आज के समय में टूटते परिवारों के लिए भी अत्यंत आवश्यक हैं। जहां पर संवादहीनता एवं स्वार्थ मनुष्यों में दूरियां उत्पन्न कर रहा है।

वही संगतिकरण का वेदों का सन्देश अत्यंत व्यावहारिक एवं स्वीकार करने योग्य हैं। मंडूक सूक्त का छठा मंत्र वृहद् महत्व रखता है। इस मन्त्र में कहा गया है की मेंढ़कों में कोई गौ के समान ध्वनि करता है। कोई बकरे के समान करता है। कोई मेंढक चितकबरे रंगा का तो कोई हरे रंग का होता है। अनेक रूपों वाला होने के बाद भी सभी मेंढक का नाम एक ही है। सभी मिलकर एक ही वेद वाणी बोलते हैं। सामाजिक अर्थ चिंतन करने योग्य है। समाज में कोई मनुष्य धनी हैं, तो कोई निर्धन है। सभी के वर्ण भी अलग अलग है। भिन्न-भिन्न पृष्ठभूमि, भिन्न-भिन्न योग्यता, भिन्न-भिन्न व्यवसाय, भिन्न-भिन्न वर्ण होने के बाद भी सभी मनुष्य बिना किसी भेदभाव के एक साथ

मिलकर वेदों का पाठ करें। यह सामाजिक सन्देश जातिवाद के विरुद्ध वेदों का अनुपम सन्देश हैं। मंडूक सूक्त के अगले तीन मन्त्रों में मनुष्यों को ईश्वरीय वरदान वर्षा ऋतु का आरम्भ तप करते हुए सोमयाग आदि अग्निहोत्र करने का सन्देश देते हैं। यज्ञ में संगतिकरण के अतिरिक्त इन मन्त्रों के पाठ करते हुए बड़े-बड़े होम किये जायें। यह होम एवं आचरण रूपी व्रत एक दिन, चातुर्मास अथवा वर्ष भर भी चल सकते हैं।

वेद पाठ के आरम्भ को उपाकर्म कहा जाता है। और व्रत समाप्ति पर किये जाने वाले संस्कार को उपार्जन कहते हैं। यह वैदिक संस्कार मनुष्य को व्रतों के पालन का सन्देश देते हैं। वर्षा ऋतु में अग्निहोत्र करने का विधान पर विशेष बल इसलिए भी दिया गया है क्यूंकि इस ऋतु में अनेक बीमारियां भी फैलती हैं। इन बीमारियों से बचाव में यज्ञ अत्यंत लाभकारी हैं। पंडित भवानी प्रसाद जी अपनी पुस्तक आर्य पर्व पद्यति में वर्षाकाल में हवन सामग्री में काला अगर, इंद्र जौ, धूपसरल, देवदारु, गूगल, जायफल, गोला, तेजपत्र, कपूर, बेल, जटामांसी, छोटी इलायची, गिलोय बच, तुलसी के बीज, छुहारे, नीम आदि के साथ गौ घृत से हवन करने का विधान लिखते हैं। यह वैदिक विज्ञान आदि काल से ऋषियों को ज्ञात था। इन जड़ी बूटियों के होम में प्रयोग से वे वर्षा ऋतु में फैलनी वाली बिमारियों से अपनी रक्षा करते थे। यह शारीरिक विज्ञान मंडूक सूक्त के सन्देश में समाहित हैं। इस सूक्त का अंतिम मन्त्र एक प्रकार से फलश्रुति है। इस मन्त्र में वेदों के व्रत का पालन करने वाले के लाभ जैसे अनंत शिक्षा का लाभ, ऐश्वर्या और आयु वृद्धि की प्राप्ति का हृदय में प्रभाव, परमात्मा की उपासना का सन्देश आदि बताया गया है। वेदव्रती ब्राह्मणों अर्थात मंडूकों से हमें सैकड़ों गौ की प्राप्ति हो अर्थात हमारा कल्याण हो।

तुलसीदास रामायण में एक चौपाई मंडूक सूक्त से सम्बन्ध में आती है- दादुर धुनि चहु दिसा सुहाई। बेद पढ़हिं जनु बटु समुदाई॥ नव पल्लव भए बिटप अनेका। साधक मन जस मिलें बिबेका॥ -किष्किन्धा काण्ड।

अर्थात वर्षा का वर्णन में श्रीराम जी लक्ष्मण को कहते हैं- वर्षा में मेंढकों की ध्वनी इस तरह सुनाई देती है जैसे बटुकसमुदाय (ब्रह्मचारीगण) वेद पढ़ रहे हों। पेड़ों पर नए पत्ते निकल आये हैं। एक साधक योगी के मन को यह विवेक देने वाला है।

वेद पाठ के आरम्भ को उपाकर्म कहा जाता है। और व्रत समाप्ति पर किये जाने वाले संस्कार को उपार्जन कहते हैं। यह वैदिक संस्कार मनुष्य को व्रतों के पालन का सन्देश देते हैं। वर्षा ऋतु में अग्निहोत्र करने का विधान पर विशेष बल इसलिए भी दिया गया है क्यूंकि इस ऋतु में अनेक बीमारियां भी फैलती हैं। इन बीमारियों से बचाव में यज्ञ अत्यंत लाभकारी हैं। पंडित भवानी प्रसाद जी अपनी पुस्तक आर्य पर्व पद्यति में वर्षाकाल में हवन सामग्री में काला अगर, इंद्र जौ, धूपसरल, देवदारु, गूगल, जायफल, गोला, तेजपत्र, कपूर, बेल, जटामांसी, छोटी इलायची, गिलोय बच, तुलसी के बीज, छुहारे, नीम आदि के साथ गौ घृत से हवन करने का विधान लिखते हैं। यह वैदिक विज्ञान आदि काल से ऋषियों को ज्ञात था। इन जड़ी बूटियों के होम में प्रयोग से वे वर्षा ऋतु में फैलनी वाली बिमारियों से अपनी रक्षा करते थे। यह शारीरिक विज्ञान मंडूक सूक्त के सन्देश में समाहित हैं। इस सूक्त का अंतिम मन्त्र एक प्रकार से फलश्रुति है। इस मन्त्र में वेदों के व्रत का पालन करने वाले के लाभ जैसे अनंत शिक्षा का लाभ, ऐश्वर्या और आयु वृद्धि की प्राप्ति का हृदय में प्रभाव, परमात्मा की उपासना का सन्देश आदि बताया गया है। वेदव्रती ब्राह्मणों अर्थात मंडूकों से हमें सैकड़ों गौ की प्राप्ति हो अर्थात हमारा कल्याण हो।

महात्मा हंसराज एक सच्चे संत

महात्मा हंसराज एक सच्चे संत, समाज सेवक एवं आर्यत्व से परिपूर्ण महामानव थे। वह आर्यों के एक कुशल एवं योग्य मार्गदर्शक थे। डीएवी शिक्षण संस्था के जनक थे। उन्हें कोटि-कोटि नमन। उनके जीवन की एक घटना जोअनुकरणीय है- उनका एक सेवक हरिद्वार में भंडारे में दावत खा आया और रात भर बेचैन रहा। महात्मा जी उससे कहा जाओ और पता लगाओ कि भंडारा किसने किया और क्यों किया। उसने लौटकर बताया कि एक व्यक्ति ने अपनी बेटी की शादी दुगनी उम्र से भी अधिक के व्यक्ति से धन लेकर कर दी और प्रायश्चित हेतु पंडित के बताने पर भंडारा किया। महात्मा जी ने महत्वपूर्ण उपदेश देते हुए कहा कि 'जैसा अन्न वैसा मन।' हम खाते समय नहीं देखते कि यह नेक कमाई का है या नहीं। तेहरवीं, भंडारे या पाप से कमाई की वस्तु का सेवन कभी न करें। पोंगा अज्ञानी पंडितों के बहकावे से बचें। सत्य वेद के ज्ञान पर चलें। इसी में सबका भला है।

- डॉ. जयसिंह 'सरोज'

सूर्य नमस्कार एवं मुसलमानों की भ्रांति

योग दिवस के अवसर पर सूर्य नमस्कार करने का अनेक मुस्लिम संगठनों ने यह कहकर विरोध किया हैं कि इस्लाम में केवल एक अल्लाह की इबादत करने का आदेश है जबकि हिन्दू समाज में तो सूर्य, पेड़, जल, नदी, पर्वत आदि सभी की पूजा का विधान हैं। इसलिए एक मुस्लमान के लिए सूर्य नमस्कार करना नापाक हैं।

यह स्पष्टीकरण सुनकर मुझे आर्यसमाज के प्रसिद्ध भजनोपदेशक स्वर्गीय पृथ्वी सिंह बेधड़क का एक भजन स्मरण हो आया जिसमें एक मुस्लिम लड़की एक आर्य लड़की से इस्लाम ग्रहण करना का प्रलोभन यह कहकर देती हैं कि इस्लाम में एक अल्लाह की इबादत करने का बताया गया है तो आर्य लड़की उसे प्रतिउत्तर देती है कि हमारे वेद तो आपके इस्लाम से करोड़ो वर्ष पुराने हैं एवं उसमें विशुद्ध एकेश्वरवाद अर्थात केवल एक ईश्वर की उपासना का प्रावधान बताया गया हैं जबकि मुसलमानों को यह भ्रान्ति हैं कि वे केवल एक अल्लाह की इबादत करते हैं क्योंकि उनके तो कलमे में भी एक अल्लाह के अलावा रसूल भी शामिल हैं और बाकि नबी, फरिश्ते, शैतान, जिन्न, बुराक गधे आदि की बारी तो अभी आनी बाकि हैं।

स्वामी दयानन्द द्वारा बताये गए ईश्वर और देवता के अंतर को मुसलमान लोग समझ जाते तो हम वन्दे मातरम नहीं गायेंगे, हम भारत माता कि जय नहीं बोलेंगे, हम सूर्य नमस्कार नहीं करेंगे जैसे अपरिपक्व बयान देकर उन्हें अपने आपको अलग दिखाने की कवायद नहीं करनी पड़ती। ईश्वर को परिभाषित करते हुए स्वामी दयानन्द लिखते है कि जिसको ब्रह्मा, परमात्मादि नामों से कहते हैं, जो सच्चिदानन्दादि लक्षण युक्त है जिसके गुण, कर्म, स्वाभाव पवित्र हैं जो सर्वज्ञ, निराकार, सर्वव्यापक, अजन्मा, अनंत, सर्वशक्तिमान, दयालु, न्यायकारी, सब सृष्टि का कर्ता, धर्ता, हर्ता , सब जीवों को कर्मानुसार सत्य न्याय से फलदाता आदि लक्षणयुक्त परमेश्वर हैं उसी को मानता हूं।

देव शब्द को परिभाषित करते हुए स्वामी दयानन्द लिखते है कि उन्हीं विद्वानों, माता-पिता, आचार्य, अतिथि, न्यायकारी राजा और धर्मात्मा जन, पतिव्रता स्त्री, स्त्रीव्रत पति का सत्कार करना देवपूजा कहलाती है।

निरुक्त 7/15 में यास्काचार्य के अनुसार देव शब्द दा, द्युत और दिवु इस धातु से बनता हैं। इसके अनुसार ज्ञान, प्रकाश, शांति, आनंद तथा सुख देने वाली सब वस्तुओं को देव कहा जा सकता हैं। यजुर्वेद 14/20 में अग्नि, वायु, सूर्य, चन्द्र वसु, रूद्र, आदित्य, इंद्र इत्यादि को देव के नाम से पुकारा गया हैं। परन्तु वेदों में तो पूजा के योग्य केवल एक सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, भगवान को ही बताया गया हैं। देव शब्द का प्रयोग सत्यविद्या का प्रकाश करने वाले सत्यनिष्ठ विद्वानों के लिए भी होता हैं क्योंकि वे ज्ञान का दान करते हैं और वस्तुओं के यथार्थ स्वरूप को प्रकाशित करते हैं। देव का प्रयोग जीतने की इच्छा रखने वाले व्यक्तियों विशेषत: वीर, क्षत्रियों, परमेश्वर की स्तुति करनेवाले तथा पदार्थों का यथार्थ रूप से वर्णन करनेवाले विद्वानों, ज्ञान देकर मनुष्यों को आनंदित करनेवाले सच्चे ब्राह्मणों, प्रकाशक, सूर्य,चन्द्र, अग्नि, सत्य व्यवहार करने वाले वैश्यों के लिए भी होता हैं।

स्वामी दयानन्द देव शब्द पर विचार करते हुए ऋग्वेदादिभाष्य-भूमिका वेदविषयविचार अध्याय 4 में लिखते हैं की दान देने से 'देव' नाम पड़ता हैं और दान कहते हैं अपनी चीज दूसरे के अर्थ दे देना। 'दीपन' कहते हैं प्रकाश करने को, 'द्योतन' कहते हैं सत्योपदेश को, इनमें से दान का दाता मुख्य एक ईश्वर ही है की जिसने जगत को सब पदार्थ दे रखे है तथा विद्वान मनुष्य भी विद्यादि पदार्थों के देने वाले होने से देव कहाते है। दीपन अर्थात सब मूर्तिमान द्रव्यों का प्रकाश करने से सूर्यादि लोकों का नाम भी देव हैं। तथा माता-पिता, आचार्य और अतिथि भी पालन, विद्या और सत्योपदेशादी के करने से देव कहाते हैं। वैसे ही सूर्यादि लोकों का भी जो प्रकाश करनेवाला हैं, सो ही ईश्वर सब मनुष्यों को उपासना करने के योग्य इष्टदेव हैं, अन्य कोई नहीं। कठोपनिषद

5/15 का भी प्रमाण हैं की सूर्य, चन्द्रमा, तारे, बिजली और अग्नि ये सब परमेश्वर में प्रकाश नहीं कर सकते, किन्तु इस सबका प्रकाश करनेवाला एक वही है क्यूंकि परमेश्वर के प्रकाश से ही सूर्य आदि सब जगत प्रकाशित हो रहा हैं। इसमें यह जानना चाहिये की ईश्वर से भिन्न कोई पदार्थ स्वतंत्र प्रकाश करनेवाला नहीं हैं , इससे एक परमेश्वर ही मुख्य देव हैं।

देव और ईश्वर के मध्य भेद को समझने से आपकी भ्रांति का निवारण हो जाता है। वेद केवल और केवल एक ईश्वर की उपासना का संदेश देते है। अग्नि, वायु, सूर्य, चन्द्र वसु, रूद्र, आदित्य, इंद्र, सत्यनिष्ठ विद्वान, वीर क्षत्रिय, सच्चे ब्राह्मण, सत्यनिष्ठ वैश्य, कर्तव्यपरायण शूद्र से लेकर माता-पिता, आचार्य और अतिथि तक सभी मनुष्यों के लिए कल्याणकारी हैं इसलिए सम्मान के योग्य हैं। जिस प्रकार से माता-पिता, आचार्य आदि सभी खिदमत करने वाले मगर उनका सम्मान हर मुसलमान करता हैं कोई उन्हें यह नहीं कहता कि हम सेवक का नमन क्यों करे उसी प्रकार से सूर्य, वायु, अग्नि, पृथ्वी, पवन आदि भी मनुष्य कि सेवा करते हैं इसलिए सम्मान के योग्य हैं। सूर्य नमस्कार और वन्दे मातरम सम्मान देने के समान है न कि पूजा करना है।

सम्मान करना एवं पूजा करने में भेद को समझने से इस शंका का समाधान सरलता से हो जाता है जिसका श्रेय स्वामी दयानंद को जाता है।

घमोरियां

पसीना आकर जब वहीं त्वचा पर ही सूख जाता है तो वह त्वचा पर एक हल्की परत बना लेता है। उसके बाद जो नया पसीना आता है तो हल्की परत के कारण ट्रैफिक जाम लग जाता है, ऐसे में वहीं रुका हुआ पसीना एक छोटी फुंसी का रूप ले लेता है, इसे ही 'घमोरियां' कहते हैं। घमोरिया ठीक करने के सारे पाउडर न केवल शरीर को हानि करते हैं बल्कि कुछ देर ही थोड़ी सी राहत देते हैं।

नहाते समय पतला तौलिया लेकर उसे गीला करें और पूरे शरीर पर खूब रगड़ें। साइफन का सिद्धांत आपने पढ़ा ही होगा। न केवल ट्रैफिक जाम खुलेगा बल्कि रोम कूपों की अन्दर की गन्दगी को भी वह रगड़ बाहर खींच लाएगी। बीच-बीच में गर्म हो गए तौलिए को भिगोते रहें। लगभग 8-10 मिनट धीरे-धीरे रगड़ते रहें। मुंह पर न रगड़ें क्योंकि मुंह की त्वचा खुली रहती है तो हवा लगने से वह सख्त हो जाएगी, हालांकि बहुत हल्का स्पर्श देकर मुंह पर भी किया जा सकता है। उसके बाद पानी से सफाई करें। इसके बाद वहीं बैठकर सरसों के तेल की मालिस भी कर लें तो क्या कहने। फिर पानी से सफाई कर लें। इस तरह के स्नान करने में 30-40 मिनट लग जाएंगे। आपको लगेगा जीवन में आज पहली बार नहाया हूं। पहले ही दिन 80% घमोरियां ठीक हो जाएगी। दूसरे दिन 100% खत्म हो जायेगा।

आपको यह रोज करना है क्योंकि घमोरिया तो ठीक होगा ही, साथ में आपको बहुत आनंद इससे मिलेगा। योगी लोग सर्दियों में भी इसी तरह का स्नान करते हैं। आंखों की रोशनी बढ़ती है। शरीर के विजातीय-तत्व धुल जाते हैं। सुस्ती भाग जाती है। शरीर की त्वचा छोटे बालक की तरह चिकनी, स्निग्ध और कोमल हो जाती है। ऐसा स्नान जिसने दो-चार दिन कर लिया तो वह इसे कभी नहीं छोड़ेगा। ऐसा स्नान करने वाले को कोई फर्क नहीं पड़ता कि कमरे में पंखा चल रहा है या बंद है। पूरा पसीना आने पर भी आपको लगेगा जैस एसी के सामने बैठा हूं। आप यह प्रयोग करेंगे तो जून, जुलाई और अगस्त के महीने में भी शिमला जैसी फिलिंग अनुभव करेंगे।

ईश्वर वैदिक

ऋषि दयानन्द ने चार वेदों को ईश्वर प्रदत्त अनादि ज्ञान सिद्ध किया

मनमोहन कुमार आर्य
देहरादून, उत्तराखंड

सूर्य, चन्द्र, पृथिवी तथा नक्षत्रों आदि से युक्त हमारी यह भौतिक सृष्टि मनुष्योत्पत्ति से बहुत पहले बन चुकी थी। अत: इसे मनुष्यों ने नहीं बनाया यह बात तो स्पष्ट है। मनुष्य एक, दो व करोड़ों मिलकर भी इस सृष्टि व इसके एक ग्रह को भी नहीं बना सकते। यदि ऐसा है तो फिर इस सृष्टि को किसने बनाया है? इसका उत्तर है कि इस जगत् में एक सच्चिदानन्दस्वरूप, सर्वज्ञ, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र सत्ता है जिसने इस जगत् को बनाया है। इसे ही ईश्वर व परमात्मा भी कहते हैं। चेतन देवों में यही परमात्मा सबसे बड़े देव अर्थात् महादेव हैं। मनुष्यों में भी दिव्य गुण पाये जाते हैं अत: उन दिव्य गुणों के धारण से वह भी देवता कहलाते हैं।

माता, पिता व आचार्य प्रमुख चेतन देवों में आते हैं अत: अपनी सन्तानों एवं शिष्यों द्वारा पूजनीय, स्तुति करने योग्य व उपासनीय होते हैं। ईश्वर इन सब देवों से भिन्न हैं। वह महादेव हैं जिसके सभी मनुष्य व प्राणियों पर अनन्त उपकार हैं। परमात्मा ने न केवल सृष्टि बनाई है अपितु वही सब प्राणियों को अपने ज्ञान, विज्ञान व शक्तियों से जन्म देता व पालन आदि भी करता है। हमारा जीवन एक क्षण के लिये भी उसके उपकार किए बिना व्यतीत होना सम्भव नहीं है। अत: ऐसा ईश्वर के प्रति जीवों का कृतज्ञ होना स्वाभाविक एवं अनिवार्य है। जो ज्ञानी व विवेकीजन समाज में होते हैं वह ईश्वर के उपकारों को जानकर उसको और अधिक जानने व उसकी स्तुति, प्रार्थना व उपासना को अपना आवश्यक कर्तव्य जानकर जन्म से मृत्यु के अन्तिम क्षण तक प्रयत्न करते हैं जैसा हम ऋषि दयानन्द व उनके अनुयायी महापुरुषों के जीवन में देखते हैं। हमें भी ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव व स्वरूप को यथार्थ रूप में जानना चाहिये। ईश्वर को जानने में सत्यार्थप्रकाश, आर्याभिविनय, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका, 11 उपनिषद, 6 दर्शन सहित ईश्वर प्रदत्त ज्ञान वेद परम सहायक एवं लाभकारी हैं। विशुद्ध मनुस्मृति का भी सभी मनुष्यों को अध्ययन करना चाहिये इससे अनेक विषयों के ज्ञानवर्धन सहित द्वेषी लोगों द्वारा मनुस्मृति के विरुद्ध फैलायी गई भ्रान्तियों का निवारण होगा। इन सब ग्रन्थों के अध्ययन से हम सच्चे आस्तिक बन सकते हैं और ऐसा करके हम अपने व दूसरों के जीवन को सुखी एवं उन्नति करने वाला बना सकते हैं।

मनुष्य के मन में जिज्ञासा हो सकती है इस सृष्टि को ईश्वर ने बनाया है तो मनुष्य व इतर प्राणियों की उत्पत्ति ईश्वर से हुई या अपने आप हो गई? ज्ञान कहां से कब व कैसे उत्पन्न व

माता, पिता व आचार्य प्रमुख चेतन देवों में आते हैं अतः अपनी सन्तानों एवं शिष्यों द्वारा पूजनीय, स्तुति करने योग्य व उपासनीय होते हैं। ईश्वर इन सब देवों से भिन्न हैं। वह महादेव हैं जिसके सभी मनुष्य व प्राणियों पर अनन्त उपकार हैं। परमात्मा ने न केवल सृष्टि बनाई है अपितु वही सब प्राणियों को अपने ज्ञान, विज्ञान व शक्तियों से जन्म देता व पालन आदि भी करता है। हमारा जीवन एक क्षण के लिये भी उसके उपकार किए बिना व्यतीत होना सम्भव नहीं है। अतः ऐसा ईश्वर के प्रति जीवों का कृतज्ञ होना स्वाभाविक एवं अनिवार्य है। जो ज्ञानी व विवेकीजन समाज में होते हैं वह ईश्वर के उपकारों को जानकर उसको और अधिक जानने व उसकी स्तुति, प्रार्थना व उपासना को अपना आवश्यक कर्तव्य जानकर जन्म से मृत्यु के अन्तिम क्षण तक प्रयत्न करते हैं जैसा हम ऋषि दयानन्द व उनके अनुयायी महापुरुषों के जीवन में देखते हैं। हमें भी ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव व स्वरूप को यथार्थ रूप में जानना चाहिये। ईश्वर को जानने में सत्यार्थप्रकाश, आर्याभिविनय, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका, 11 उपनिषद, 6 दर्शन सहित ईश्वर प्रदत्त ज्ञान वेद परम सहायक एवं लाभकारी हैं।

आविर्भूत हुआ? भाषा की उत्पत्ति कब व किससे हुई? इन सब प्रश्नों का उत्तर लौकिक साहित्य में उपलब्ध नहीं होता। इनके उत्तर जानने का ऋषि दयानन्द ने अपने जीवन में प्रयत्न किया था और उन्होंने इन प्रश्नों के यथार्थ उत्तर प्राप्त किये थे। यह उत्तर हमें ऋषि दयानन्द के ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में उपलब्ध होते हैं।

ऋषि दयानन्द प्रमाण एव युक्तियों सहित बताते हैं कि यह समस्त जगत् व ब्रह्माण्ड सर्वव्यापक व सर्वशक्तिमान ईश्वर से उत्पन्न हुआ है। ईश्वर अनादि व नित्य सत्ता है। वह अविनाशी एवं अनन्त है। उसका ज्ञान व शक्तियां भी अनन्त है। ज्ञान भाषा में ही निहित होता है। अत: हमें यह भी स्वीकार करना पड़ता है कि चेतनसत्ता सर्वज्ञ ईश्वर में सब विद्याओं के ज्ञान सहित भाषा भी निहित है। इस ज्ञान व भाषा के द्वारा ही वह हमारे हृदय में समय समय प्रेरणा करता है। आत्मा में होने वाली ज्ञात व अज्ञात प्रेरणाओं के कारण से भी ईश्वर का अस्तित्व एवं उसकी सर्वव्यापकता सिद्ध होती है।

सृष्टि में प्राणी जगत एवं ज्ञान की उत्पत्ति पर विचार करते हैं तो ज्ञात होता है कि सृष्टि के आदि काल में सभी प्राणियों की अमैथुनी सृष्टि होती है। यह अमैथुनी सृष्टि जो बिना माता पिता के संसर्ग के द्वारा होती है, उसे परमात्मा किया करता है। सृष्टि की आदि में मनुष्यों की उत्पत्ति भूमि रूपी गर्भ से परमात्मा करता है। अन्य पशु आदि प्राणियों को भी परमात्मा ने इसी प्रकार मुख्य भौतिक पदार्थ भूमि व पृथिवी के गर्भ में से उत्पन्न किया है। पृथिवी के भीतर ही अमैथुनी सृष्टि में जन्म लेने वाले मनुष्यों व प्राणियों के शरीर बनते हैं और उनसे आत्मा को संयुक्त करने का काम परमात्मा ही करता है। अन्य किसी प्रकार से यह कार्य हो ही नहीं सकता। अत: सब को आदि अमैथुनी सृष्टि को परमात्मा से भूमि माता के गर्भ से ही मानना चाहिये।

ऋषि दयानन्द ने यह भी बताया है कि आदि सृष्टि युवावस्था में हुई थी। यदि परमात्मा आदि सृष्टि में शिशुओं को बनाता तो उनका पालन करने के लिये माता-पिताओं की आवश्यकता पड़ती और जो वृद्धावस्था में करता तो उनसे सन्तान उत्पत्ति न होने से सृष्टि का क्रम आगे नहीं चल सकता था। अत: मनुष्यों की सृष्टि आदि काल में प्रथम अमैथुनी हुई और सभी मनुष्य अर्थात् स्त्री पुरुष युवावस्था में उत्पन्न हुए थे। यह भी बता दें कि ऋषि दयानन्द के सत्यार्थप्रकाश में वर्णन तथा महाभारत के एक श्लोक के अनुसार मनुष्य की प्रथम सृष्टि भारत के तिब्बत प्रदेश में हुई थी। सृष्टि की आदि में सारी पृथिवी पर कोई एक देश व राजा नहीं था। इस सृष्टि में उत्पन्न मनुष्यों ने ही सारे विश्व को बसाया है। उन्हीं ने पहले आर्यावर्त बसाया और बाद में पूरे विश्व में फैल कर अन्य स्थानों पर मनुष्यों की जनसंख्या में वृद्धि की। 1 अरब 96 करोड़ वर्ष से अधिक पुराना इतिहास होने से सभी लोग अपने सत्य इतिहास को भूल गये हैं परन्तु तिब्बत में सृष्टि होने और आर्यों के पूरे विश्व में फैलने का इतिहास विश्वसनीय एवं तर्क सहित महाभारत आदि के प्रमाणों से पुष्ट है।

मनुष्यों के उत्पन्न होने पर उन्हें ज्ञान देने की आवश्यकता थी। मनुष्य बिना ज्ञान व भाषा के अपना कोई कार्य नहीं कर सकते। परमात्मा भी नहीं चाहेगा कि सृष्टि की आदि में मनुष्यों को बिना किसी कारण ज्ञान व भाषा से वंचित रखा जाये। सभी पशु व पक्षियों को भी वह स्वभाविक ज्ञान देता है जिससे वह अपने सभी व्यवहार सम्पन्न करते हैं। सृष्टि के आदि काल में परमात्मा ही सर्वज्ञ व सर्वज्ञानमय सत्ता होती है। सर्वव्यापक व सर्वान्तर्यामी होने से वह सभी मनुष्यों की आत्मा के भीतर व बाहर भी विद्यमान होती है। परमात्मा सर्वज्ञ एवं सर्वशक्तिमान हैं।

महर्षि दयानन्द एवं आर्यसमाज के बारे में महापुरुषों के विचार

- गांधी जी राष्ट्र-पिता हैं, पर स्वामी दयानन्द राष्ट्र-पितामह हैं। **– पट्टाभि सीतारमैया**
- ऋषि दयानन्द की ज्ञानाग्नि विश्व के मुलभूत अक्षर तत्व का अद्भुत उदाहरण है। **–डा. वासुदेवशरण अग्रवाल**
- स्वामी दयानन्द के राष्ट्र प्रेम के लिए उनके द्वारा उठाये गए कष्टों, उनकी हिम्मत, ब्रह्मचर्य जीवन और अन्य कई गुणों के कारण मुझको उनके प्रति आदर हैं। उनका जीवन हमारे लिए आदर्श बन जाता हैं। भारतीयों ने उनको विष पिलाया और वे भारत को अमृत पीला गए। **– सरदार पटेल**
- महर्षि दयानन्द स्वाधीनता संग्राम के सर्वप्रथम योद्धा थे। **– वीर सावरकर**
- स्वामी दयानन्द पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने आर्यावर्त आर्यावर्तियों के लिए घोषणा की। **– एनी बेसेन्ट**

वेदों मे वर्णित दुष्प्रवृत्ति उन्मूलन

आचार्य ओमकार शास्त्री
उपाचार्य, आर्ष गुरुकुल, नोएडा

वेद हमारे जीवन का आधार है। वेद में मनुष्य जीवन के कल्याण, सद्मार्ग और सत्य उपदेश की बात कही गई है। जिससे कि मनुष्य का जीवन सौम्य और मधुर और आनन्दयुक्त हो। वेद संसार की सबसे प्रचीन पुस्तक है, वेद को संसार का मार्गदर्शन ग्रन्थ माना गया है अत: हम वेद के मार्ग पर चलकर दुष्प्रवृत्तियों से दूर रहना है। वेद का मंत्र कहता है-

भद्रं कर्णेभिः श्रणूयाम् देवा भंद्र
पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैः रङै स्तुष्टुवां
सस्तनूभिर्व्यशेंमहि देवहितं यदायुः।।

हम विद्वान पुरुषों के साथ रहकर सुन्दर शब्द सुने, सत्य देखे और परमात्मा की उपासना करें ताकि हमारी आयु लम्बी हो। हम असत्य भाषण न करें, झूठी प्रशंसा न सुने, खोटा न देखे और कुविचार की ओर हमारी प्रवृत्ति न हो। परमात्मा ने यह मानव शरीर क्यों बनाया इसलिए कि हम देवताओ के समान जीवन जीते हुए दीर्घ आयु प्राप्त करें। ब्रह्मा ने सभी जीवों की आयु निर्धारित कर दी है। मनुष्य के लिए समान्यतया सौ वर्ष की आयु प्रदान की है। यह मनुष्य के अपने हाथों मे है कि वह इस जीवन को सुख-समृद्धि को भरकर दैवी आचरण करते हुए सौ वर्ष से अधिक बढ़ा ले या फिर अपने दुराचार में फंसकर मानसिक व शारीरिक रोगों के द्वारा उसे जल्दी ही नष्ट कर दें। दैवी आपदाओं और दुर्घटनाओं में अकाल मृत्यु की बात अलग है।

मानव शरीर में दुर्गुणों, दुराचरणों और दुष्प्रवृतियों की ओर आकर्षित होने की स्वाभाविक लालसा रहती है। कुविचार और कुसंस्कार अपनी मायावी चमक दमक से भ्रमित करके अपने जाल में फंसाते हैं। तरह-तरह के आकर्षक, मादक मोहक, लुभाने और प्रलोभन हमारी इद्रियों को ठगते हैं और कुमार्गगामी बनाते हैं। अनियंत्रित इंद्रियां अपनी स्वाभाविक एवं आवश्यक मर्यादा का उल्लंघन करके इतनी स्वेछाचारी एवं चटोरी हो जाती हैं कि वे स्वास्थ्य और धर्म के लिए संकट उपस्थित कर देती हैं।

इंद्रियों का नियंत्रण स्वर्ग का द्वार है। यही ईश्वर की सच्ची उपासना है। इसी से जीवन में सुख शांति और उल्लास का वतावरण बनता है। इंद्रियों की उच्चश्रृंखलता से सर्वत्र अशांति और अंधकार छा जाता है तथा मनुष्य नरकवासी बन जाता है। मनुष्य को हर समय आत्म संयम तथा इंद्रिय निग्रह को ही प्राथमिकता देनी चाहिए। हम अपने कानों से सदा भद्र अच्छी बाते ही सुने। जो उचित है कल्याणकारी है ऐसे विचारों को ही स्वीकार करें। नेत्रों से भी अच्छी, शुभ वस्तुओं को ही देखें। अनुचित बातों की ओर ध्यान न दें । कामुक दृष्टि तथा ऐसे दृश्यों के अश्लील चेतन से अपना सर्वनाश न करें। हमारे हाथ पैर शरीर के प्रत्येक अंग केवल अच्छे परोपकार एवं परमार्थ के कार्य ही करें अपनी स्वार्थ पूर्ति के लिए कभी भी कोई अनुचित कार्य न करें। किसी भी जीव को कष्ट न पहुचायें।

इससे सभी अंग-प्रत्यंग स्वस्थ एवं पुष्ट होते हैं तथा शरीर बलवान, ओजस्वी तेजस्वी बनता है। इस प्रकार मनुष्य दीर्घ आयु तक जीवित रहकर संसार में उपकार के कार्य करता रहता है। परमपिता परमेश्वर ने जन्म के समय हमें जो मनोवृत्तियां दी हैं वे सब अत्यन्त उपयोगी एवं महत्वपूर्ण हैं। उनको उचित रीति से प्रयोग में लाने से हम सुख शान्तिपूर्ण जीवन व्यतीत कर सकते हैं। भगवान हमें अपनी इन्द्रियों को वश में करने की शक्ति प्रदान करें। जिससे हम अपने जीवन को अच्छे वेदमार्ग पर चलायें और दुष्प्रवृत्तियों से बचें और मधुर वाणी बोलें क्योंकि ऋग्वेद में कहा गया है कि जो मनुष्य अनुचित शब्दों का प्रयोग नहीं करते, बुरी वस्तुओं को ग्रहण नहीं करते, श्रेष्ठता की पूजा करते हैं एवं असत् तत्वों को निकालकर बाहर भगा देते हैं और जिनका ज्ञान सात्विक है वही आप्त पुरुष कहे जाते हैं-

"एवा त इन्द्रो चथमहेम श्रवस्या न त्मना वाजयन्तः। अश्याम् तत्साप्तमाशुषाणा ननमो वधरदेवस्य पीयोः।। ऋ०२/१९/७

इस संसार में विभिन्न प्रकार के लोग रहते हैं। इनमें से कुछ ऐसे भी हैं जो जीवन के केवल भौतिकवादी मार्ग में ही विश्वास करते हैं। वे परम लक्ष्य की ओर ध्यान ही नहीं देते और वे अपने मार्ग से भटक जाते हैं और हमेशा दु:ख उठाते हैं। इसलिये हमें सदैव वेद मार्ग का अनुसरण करते हुये अपने जीवन को श्रेष्ठ बनाना चाहिए जिससे कि ऋषियों की परम्परा वाले लोग सदाचारी जीवन जियें तभी दुष्प्रवृत्तियों को खत्म किया जा सकता है। वैदिक पथ ही कल्याण का मार्ग है और कोई नहीं।

देशभक्तिः

डॉ. शिव प्रसाद शर्मा

सर्वेषां मनष्याणां माता मातृभूमिश्च द्वे सर्वोत्तमे सर्वप्रिये च भक्तः। स्वदेशतः सुखकरं न किमपि स्थानं भवति। जननीतः कोऽपि हितचिन्तको नान्यः पुत्रस्यार्थ माता सर्वमपि दुःसाहं दुखं सहते। अत एव देशान्तरं प्राप्तः कोऽपि मनुष्यः स्वदेशं स्मरं-स्मारं विदेशे प्राप्त सुखं नैव गणयति।

कष्टान् सहमानोऽपि स्वदेशमेव गन्तुं वांछति। अत एव सत्यमुक्तम्- 'जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी' यथा जननी अस्मान् सततं लालयति, तथैव जन्मभूमिरपि पालयति। स्वदेशस्यैव मुद्रा, जलेन, तजेसा च निर्मितं शरीरं मदीयं स्वबालमित्रैः सह स्वच्छन्दं क्रीडां कर्तु वांछति। अत एव स्वदेशं प्रति अस्माकं समादरः स्वभाविक एव तदुक्तम्-

अस्ति यद्यपि सर्वत्र नीरं नीरजराजितम्।
रमते न मरालस्य मानसं मानसं विना॥

यत्र कुत्र गतो जनः स्वदेशं स्मरति। पुनः इच्छति सः स्वदेशं गन्तुं द्रुष्टुम्। तत्रैव तस्य मनो रमते। भारतवर्षम् अस्माकं जन्मभूमिः। पुरा भरतो नाम चक्रवर्ती राजा, तेन शासितो देशो 'भारतवर्ष' इत्यभिधानं प्राप्तः। प्रधानपर्वतः हिमालयोऽस्य देशस्य मुकुटः अस्ति। रत्नाकरः अस्य चरणौ प्रक्षालयति। अस्मिन् भारते वेदव्यासः वाल्मीकिः, भक्तप्रवरः प्रह्लादः, ध्रुवः, अशोकादयः चक्रवर्तिनृपतयः, वराहमिहिरादयः ज्योतिर्विदः, वैय्याकरणाः, नैय्यायिकाः, वेदान्तिनोऽपि इमं देशमलश्चक्रुः। अतो वयं यत्र कुत्रापि वसामः, परं स्वदेशं स्वीकयां जन्मभूमिश्च विस्मर्तु नैव शक्नुमः।

स्वाभाविकमेव सर्वे बुद्धिजीविनः नेतारः जीवन समर्पणेनापि मातृ-भूमिरक्षां कर्तु तत्पर आसन्। वयं भारतीया देवेभ्योऽपि धन्याः, देवा अपि अस्माकं देशे जन्मग्रहणाय स्पृहयन्ति। तदुक्तम्-

गायन्ति देवाः किल गीतकानि धन्यास्तु ते भारतभूमिभागे।
स्वर्गापवर्गास्पदहेतुभुते भवन्ति भूयः पुरुषाः सुरत्वात्॥

इत्थं भारत देशे जन्मलाभाय स्वर्गीया अपि सुराः प्रयतन्ते। एतेन भारतस्य देशस्य महतो विशिष्टता विद्यते। अत एव महात्मागांधीः, जवाहरलाल नेहरू, सरदार वल्लभभाई पटेलः, सुाभाष चंद्र बोसः, चंद्रशेखर आजाद प्रभृतयोऽस्माकं देशस्य रत्नभूताः महापुरुषाः स्वजन्मभूमिं समुद्धर्तु सर्वस्वं समर्प्य पश्चात् स्वात्मानमपि समर्पितवन्तः।

महाराष्ट्रकेसरी शिववीरः, महारानी दुर्गावती, भारतरत्नभूता श्रीमती इंदिरागांधी, श्री लालबहादुर शास्त्री इत्यादयो नराः नार्यश्च देशरक्षार्थमेव सर्वस्वं जीवनश्च समर्प्य धन्याः जाताः। अतः सर्वैरपि जनैः देशसावार्थ तदर्थ स्वजीवनमपि बलिदानं कर्तुश्च तत्परैः भवितव्यमिति।

आर्योद्देश्यरत्नमाला

- **आर्यावर्त :** हिमालय, विंध्याचल, सिंधु नदी और ब्रह्मपुत्र नदी इन चारोंके बीच में जहां तक उनका विस्तार है, उनके मध्य में जो देश है, उसका नाम 'आर्यावर्त' है।
- **दस्यु :** अनार्य अर्थात् जो अनाड़ी आर्यों के स्वभाव और निवास से पृथक डाकू, चोर, हिंसक कि जो दुष्ट मनुष्य है वह 'दस्यु' कहाता है।
- **वर्ण :** जो गुण और कर्मों के योग से ग्रहण किया जाता है, वह 'वर्ण' शब्दार्थ से लिया जाता है।
- **वर्ण के भेद :** जो ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्रादि हैं, वे 'वर्ण' कहाते हैं।
- **आश्रम :** जिनमें अत्यंत परिश्रम करके उत्तम गुणों का ग्रहण और श्रेष्ठ काम किये जाएं उनको 'आश्रम' कहते हैं।

स्वामी विवेकानन्द

पुण्य तिथि : 4 जुलाई
शत्-शत् नमन

स्वामी विवेकानन्द का जन्म कलकत्ता में शिमला पल्लै में 12 जनवरी 1863 को हुआ था और उनकी मृत्यु 4 जुलाई 1902 को हुई थी। वह श्री रामकृष्ण परमहंस के मुख्य अनुयायियों में से एक थे। इनका जन्म से नाम नरेन्द्र दत्त था, जो बाद में रामकृष्ण मिशन के संस्थापक बने। वह भारतीय मूल के व्यक्ति थे, जिन्होंने वेदांत के हिन्दू दर्शन और योग को यूरोप व अमेरिका में परिचित कराया। उन्होंने आधुनिक भारत में हिन्दू धर्म को पुनर्जीवित किया। उनके प्रेरणादायक भाषणों का अभी भी देश के युवाओं द्वारा अनुसरण किया जाता है। उन्होंने 1893 में शिकागो की विश्व धर्म महासभा में हिन्दू धर्म को परिचित कराया था। उनके पिता का नाम विश्वनाथ दत्त, कलकत्ता उच्च न्यायालय में वकील, और माता का नाम भुवनेश्वरी देवी था। स्वामी विवेकानंद अपने पिता के तर्कपूर्ण मस्तिष्क और माता के धार्मिक स्वभाव से प्रभावित थे। उन्होंने अपनी माता से आत्मनियंत्रण सीखा और बाद में ध्यान में विशेषज्ञ बन गए। उनका आत्म नियंत्रण वास्तव में आश्चर्यजनक था, जिसका प्रयोग करके वह आसानी से समाधी की स्थिति में प्रवेश कर सकते थे। उन्होंने युवा अवस्था में ही उल्लेखनीय नेतृत्व की गुणवत्ता का विकास किया। वह युवा अवस्था में ब्रह्मसमाज से परिचित होने के बाद श्री रामकृष्ण के सम्पर्क में आए। वह अपने साधु-भाईयों के साथ बोरानगर मठ में रहने लगे। अपने बाद के जीवन में, उन्होंने भारत भ्रमण का निर्णय लिया और जगह-जगह घूमना शुरू कर दिया और त्रिरुवंतपुरम् पहुंच गए, जहां उन्होंने शिकागो धर्म सम्मेलन में भाग लेने का निर्णय किया। कई स्थानों पर अपने प्रभावी भाषणों और व्याख्यानों को देने के बाद वह पूरे विश्व में लोकप्रिय हो गए। भारत लौटने के बाद उन्होंने 1897 में रामकृष्ण मिशन और मठों, 1899 में मायावती (अल्मोड़ा के पास) में अद्वितीय आश्रम की स्थापना की। आश्रम रामकृष्ण मठ की शाखा था। प्रसिद्ध आरती गीत, खानदान भव बंधन, उनके द्वारा रचित है। एक बार उन्होंने बेलूर मठ में तीन घंटों तक ध्यान किया था। भारत में उनकी ख्याति पहले ही पहुंच चुकी थी। भारतीय अध्यात्मवाद के प्रचार और प्रसार के लिए उन्होंने रामकृष्ण मिशन की स्थापना की। मिशन की सफलता के लिए उन्होंने लगातार श्रम किया, जिससे उनका स्वास्थ्य बिगड़ गया। 4 जुलाई, 1902 ई. को रात्रि के नौ बजे, 39 वर्ष की अल्पायु में 'ओ३म्' ध्वनि के उच्चारण के साथ उनके प्राण-पखेरू उड़ गए। परंतु उनका संदेश कि 'उठो जागो और तब तक चैन की सांस न लो जब तक भारत समृद्ध न हो जाय'-हमारा मार्गदर्शन करता रहेगा।

जयंती : 19 जुलाई
शत्-शत् नमन

क्रांतिकारी मंगल पांडे

क्रांतिकारी मंगल पांडे का जन्म उत्तरी भारत में पूर्वी उत्तर प्रदेश के फैजाबाद ग्राम में दिवाकर पांडे के परिवार में हुआ था। जन्म से ही हिंदू धर्म पर उनका बहुत विश्वास था, उनके अनुसार हिंदू धर्म श्रेष्ठ धर्म था। 1849 में पांडे ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की आर्मी में शामिल हुए। कहा जाता है की किसी ब्रिगेडियर के द्वारा उनकी आर्मी में भर्ती की गयी थी। 34 बंगाल थलसेना की कंपनी में उन्हें 6ठी कंपनी में शामिल किया गया, मंगल पांडे का ध्येय बहुत ऊंचा था, वे भविष्य में एक बड़ी सफलता हासिल करना चाहते थे। 1850 के मध्य में उन्हें बैरकपुर की रक्षा टुकड़ी में तैनात किया गया। तभी भारत में एक नयी रायफल का निर्माण किया गया और मंगल पांडे चर्बी युक्त हथियारों पर रोक लगाना चाहते थे। ये अफवाह फैल गयी थी कि लोग हथियारों को चिकना बनाने के लिए गाय या सुअर के मांस का उपयोग करते है, जिससे हिंदू और मुस्लिम में फूट पड़ने लगी थी। इतिहास में 29 मार्च 1857 से संबंधित कई दस्तावेज है। लोग ऐसा मानने लगे थे की ब्रिटिश हिन्दुओं और मुस्लिमों का धर्म भ्रष्ट करने में लगे हुए है। मंगल पांडे ने इसका बहुत विरोध किया और इसके खिलाफ वे ब्रिटिश अधिकारियों के विरुद्ध उठ खड़े हुए। एक दिन जब नए कारतूस थल सेना को बांटे गये थे तब मंगल पांडे ने उसे लेने से इंकार कर दिया। इसके परिणाम स्वरूप उनके हथियार छीन लिए जाने व वर्दी उतार लेने का हुक्म हुआ। मंगल पांडे ने ब्रिटिशों के इस आदेश को मानने से इंकार कर दिया और उनकी रायफल छिनने के लिए आगे बढ़े, अंग्रेज अफसर पर उन्होंने आक्रमण कर दिया। यह अकेले एक ऐसे भारतीय सैनिक थे जिन्होंने 29 मार्च 1857 को ब्रिटिश अधिकारियों पर हमला किया था। उस समय यह पहला अवसर था जब किसी भारतीय ने ब्रिटिश अधिकारी पर हमला किया था। हमले के कुछ समय बाद ही उन्हें फ़ासी की सजा सुनाई गयी और कुछ दिन बाद उन्हें फांसी दे दी गयी। लेकिन फांसी देने के बाद भी ब्रिटिश अधिकारी उनके पार्थिव शरीर के पास जाने से भी डर रहे थे।

क्रांतिकारी योद्धा चंद्रशेखर आजाद

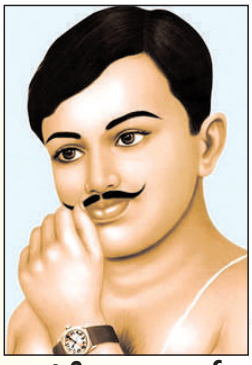

जयंती : 23 जुलाई
शत्-शत् नमन

काकोरी ट्रेन डकैती और साण्डर्स की हत्या में शामिल निर्भय क्रांतिकारी चंद्रशेखर आजाद का जन्म 23 जुलाई 1906 को उन्नाव, उत्तर प्रदेश में हुआ था। चन्द्रशेखर आजाद का वास्तविक नाम चन्द्रशेखर सीताराम तिवारी था। चन्द्रशेखर आजाद का प्रारंभिक जीवन आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र भावरा गांव में व्यतीत हुआ। भील बालकों के साथ रहते-रहते चन्द्रशेखर आजाद की माता जगरानी देवी उन्हें संस्कृत का विद्वान बनाना चाहती थीं। इसलिए उन्हें संस्कृत सीखने के लिए विद्यापीठ, बनारस भेजा गया। दिसम्बर 1921 में जब गांधी जी द्वारा असहयोग आंदोलन की शुरुआत की गयी इस समय मात्र चौहद वर्ष की उम्र में चंद्रशेखर आजाद ने इस आंदोलन में भाग लिया जिसके परिणामस्वरूप उन्हें गिरफ्तार कर मजिस्ट्रेट के समक्ष उपस्थित किया गया। जब चन्द्रशेखर से उनका नाम पूछा गया तो उन्होंने अपना नाम आजाद और पिता का नाम 'स्वतंत्रता' बताया। यहीं से चन्द्रशेखर सीताराम तिवारी का नाम चन्द्रशेखर आजाद पड़ गया था। चंद्रशेखर को पंद्रह दिनों के कड़े कारावास की सजा दी गयी। 1922 में गांधी जी द्वारा असहयोग आंदोलन को स्थगित कर दिया गया। इस घटना ने चन्द्रशेखर आजाद को बहुत आहत किया। एक युवा क्रांतिकारी प्रनवेश चैटर्जी ने उन्हें हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन जैसे क्रांतिकारी दल के संस्थापक रामप्रसाद बिस्मिल से मिलवाया। आजाद इस दल और बिस्मिल और बिस्मिल के, 'समान स्वतंत्रता और बिना किसी भेदभाव के सभी को अधिकार' जैसे विचारों से बहुत प्रभावित हुए। चन्द्रशेखर आजाद के समर्पण और निष्ठा की पहचान करने के बाद बिस्मिल ने चन्द्रशेखर आजाद को अपनी संस्था का सक्रिय सदस्य बना दिया। अंग्रेजी सरकार के धन को चोरी और डकैती जैसे कार्यो को अंजाम देकर चन्द्रशेखर आजाद अपने साथियों के साथ संस्था के लिए धन एकत्र करते थे। लाला लाजपत राय की हत्या का बदला लेने के लिए चन्द्रशेखर आजाद ने अपने साथियों के साथ मिलकर सॉण्डर्स की हत्या भी की थी। आजाद का यह मानना था कि संघर्ष की राह में किसी हिंसा का होना कोई बड़ी बात नहीं है। जलियांवाला बाग जैसे अमानवीय घटनाक्रम जिसमें हजारों निहत्थे और बेगुनाहों पर गोलियां बरसाई गई, ने चन्द्रशेखर आजाद को बहुत आहत किया जिसके बाद उन्होंने हिंसा को ही अपना मार्ग बना लिया।

जयंती : 23 जुलाई
शत्-शत् नमन

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के जनक, स्वराज्य की मांग रखने वाले और कांग्रेस की उग्र विचारधारा के समर्थक बाल गंगाधर तिलक का जन्म 23 जुलाई 1856 को रत्नागिरि जिले के चिकल गांव तालुका में हुआ था। इनके पिता का नाम गंगाधर रामचन्द्र पंत व माता का नाम पार्वती बाई गंगाधर था। कहते हैं कि इनकी माता पार्वती बाई ने पुत्र प्राप्ति की इच्छा से पूरे अश्विन महीने में निर्जला व्रत रखकर सूर्य की उपासना की थी, इसके बाद तिलक का जन्म हुआ था। इनके जन्म के समय इनकी माता बहुत दुर्बल हो गयी थी। जन्म के काफी समय बाद ये दोनों स्वस्थ्य हुये। बाल गंगाधर तिलक के बचपन का नाम केशव था और यही नाम इनके दादा जी (रामचन्द्र पंत) के पिता का भी था इसलिये परिवार में सब इन्हें बलवंत या बाल कहते थे, अत: इनका नाम बाल गंगाधर पड़ा। इनका बाल्यकाल रत्नागिरि में व्यतीत हुआ। बचपन में इन्हें कहानी सुनने का बहुत शौक था इसलिये जब भी समय मिलता ये अपने दादाजी के पास चले जाते और उनसे कहानी सुनते। दादाजी इन्हें रानी लक्ष्मी बाई, तात्या टोपे, गुरुनानक आदि देशभक्तों और क्रांतिकारियों की कहानी सुनाते थे। तिलक बड़े ध्यान से उनकी कहानियों को सुनकर प्रेरणा लेते। इन्हें अपने दादाजी से ही बहुत छोटी सी उम्र में भारतीय संस्कृति और सभ्यता की सीख मिली। इस तरह प्रारम्भ में ही इनके विचारों का रुख क्रांतिकारी हो गया और ये अंग्रेजों व अंग्रेजी शासन से घृणा करने लगे। तिलक का जन्म एक सुसंस्कृत, मध्यमवर्गीय ब्राह्मण परिवार में हुआ था। इनका परिवार चितापावन वंश से संबंधित था जो सभी धार्मिक नियमों और परंपराओं का कट्टरता से पालन करते थे। इनके पिता, गंगाधर रामचन्दन पंत रत्नागिरि में सहायक अध्यापक थे। इनके पिता अपने समय के लोकप्रिय शिक्षक थे। गंगाधर रामचन्दन पंत ने त्रिकोणमिति और व्याकरण पर अनेक पुस्तकें लिखी जो प्रकाशित भी हुई। इनकी माता, पार्वती बाई धार्मिक विचारों वाली महिला थी। इनके दादा जी स्वंय महाविद्वान थे। उन्होंने बाल को बचपन में भारतीय संस्कृति, सभ्यता, परम्पराओं और देशभक्ति की शिक्षा दी। अपने परिवार से बाल्यकाल में मिले संस्कारों की छाप तिलक के भावी जीवन में साफ दिखाई पड़ती हैं। तिलक के पिता ने घर पर ही इन्हें संस्कृत का अध्ययन कराया। जब बाल तीन साल के थे तब से ये प्रतिदिन संस्कृत का श्लोक याद करके एक पाई रिश्वत के रूप में लेते थे। पांच वर्ष के होने तक इन्होंने बहुत कुछ सीख लिया था। ■■

कोरोना अवतार

मौत से प्यार नहीं, मौत तो हमारा स्वाद है

बकरे का, पाए का, तीतर का, मुर्गे का, हलाल का, बिना हलाल का, ताजा बच्चे का, भुना हुआ,छोटी मछली, बड़ी मछली, हल्की आंच पर सिक हुआ। न जाने कितने बल्कि अनगिनत स्वाद हैं मौत के। क्योंकि मौत किसी और की, ओर स्वाद हमारा।

स्वाद से कारोबार बन गई मौत। मुर्गी पालन, मछली पालन, बकरी पालन, पोल्ट्री फार्म्स। नाम 'पालन' और मकसद 'हत्या।' स्लाटर हाउस तक खोल दिये। वो भी ऑफिशियल। गली-गली में खुले नान वेज रेस्टॉरेंट मौत का कारोबार नहीं तो और क्या हैं? मौत से प्यार और उसका कारोबार इसलिए क्योंकि मौत हमारी नहीं है । जो हमारी तरह बोल नही सकते, अभिव्यक्त नही कर सकते, अपनी सुरक्षा स्वयं करने में समर्थ नहीं हैं, उनकी असहायता को हमने अपना बल कैसे मान लिया? कैसे मान लिया कि उनमें भावनाएं नहीं होतीं? या उनकी आहें नहीं निकलतीं?

डाइनिंग टेबल पर हड्डियां नोचते बाप बच्चों को सीख देते है, बेटा कभी किसी का दिल नही दुखाना! किसी की आहें मत लेना! किसी की आंख में तुम्हारी वजह से आंसू नहीं आना चाहिए! बच्चों में झुठे संस्कार डालते बाप को, अपने हाथ मे वो हड्डी दिखाई नही देती, जो इससे पहले एक शरीर थी, जिसके अंदर इससे पहले एक आत्मा थी, उसकी भी एक मां थी...? जिसे काटा गया होगा, जो कराहा होगा, जो तड़पा होगा, जिसकी आहें निकली होंगी, जिसने बद्दुआ भी दी होगी?

कैसे मान लिया कि भगवान तुम इंसानों द्वारा की गई रचना है, कैसे मान लिया कि जब जब धरती पर अत्याचार बढ़ेंगे तो भगवान सिर्फ तुम इंसानों की रक्षा के लिए अवतार लेंगे? क्या मूक जानवर उस परमपिता परमेश्वर की संतान नहीं हैं? क्या उस इश्वर को उनकी रक्षा की चिंता नहीं है? आज कोरोना वायरस उन जानवरों के लिए, ईश्वर के अवतार से कम नहीं है ।

भगवत गीता के चतुर्थ अध्याय के सातवें और आठवें श्लोक में भगवान ने स्वयं अवतार का प्रयोजन बताते हुए कहा है। जब-जब धर्म की हानि और अधर्म का उत्थान होता है, तब दुष्टों के विनाश के लिए मैं विभिन्न युगों में, माया का आश्रय लेकर उत्पन्न होता हूं। इसके अलावा भागवत महापुराण में भी कहा गया है कि भगवान तो प्रकृति संबंधी वृद्धि-विनाश आदि से परे अचिन्त्य, अनन्त, निर्गुण हैं। तो अगर वे इन अवतार रूप में अपनी लीला को प्रकट नहीं करते तो जीव उनके अशेष गुणों को कैसे समझते?

अत: प्रेरणा देने और मानव कल्याण के लिए उन्होंने अवतार रूप में अपने आप को प्रकट किया। जब से इस वायरस का कहर बरपा है, जानवर स्वच्छंद घूम रहे है । पक्षी चहचहा रहे हैं। उन्हें पहली बार इस धरती पर अपना भी कुछ अधिकार सा नजर आया है । पेड़ पौधे ऐसे लहलहा रहे हैं, जैसे उन्हें नई जिंदगी मिली हो। धरती को भी जैसे सांस लेना आसान हो गया हो। सृष्टि के निर्माता द्वारा रचित करड़ों करोड़ योनियों में से एक कोरोना ने तुम्हे तुम्हारी ओकात बता दी। घर में घुस के मारा तुम्हे। और मार रहा है। ओर उसका तुम कुछ नहीं बिगाड़ सकते। अब घंटियां बजा रहे हो, इबादत कर रहे हो, प्रेयर कर रहे हो और भीख मांग रहे हो उससे की हमें बचा ले। धर्म की आड़ में उस परमपिता के नाम पर अपने स्वाद के लिए कभी ईद पर बकरे काटते हो, कभी दुर्गा मां या भैरव बाबा के सामने बकरे की बली चढ़ाते हो। कहीं तुम अपने स्वाद के लिए मछली का भोग लगाते हो। कभी सोचा...!! क्या ईश्वर का स्वाद होता है? क्या है उनका भोजन?

किसे ठग रहे हो? भगवान को? अल्लाह को? या खुद को? तुमने तो उस एक मात्र परमपिता के भी बंटवारे कर लिए। मंगलवार को नानवेज नही खाता। आज शनिवार है इसलिए नहीं। अभी रोजे चल रहे हैं। नौ दुर्गों में तो सवाल ही नही उठता। झूठ पर झूठ-झूठ पर झूठ-झूठ पर झूठ। फिर कुतर्क सुनो- फल सब्जीयों में भी तो जान होती है? तो सुनो फल सब्जियां संसर्ग नहीं करतीं, ना ही वो किसी प्राण को जन्मती हैं। इसीलिए उनका भोजन उचित है। ईश्वर ने बुद्धि सिर्फ तुम्हें दी। ताकि तमाम योनियों में भटकने के बाद मानव योनि में तुम जन्म मृत्यु के चक्र से निकलने का रास्ता ढूंढ़ सको। लेकिन तुमने इस मानव योनि को पाते ही स्वयं को भगवान समझ लिया। आज कोरोना के रूप में मौत हमारे सामने खड़ी है।

चिंता नहीं -चिंतन करें!!

प्रभु के योग्य स्वयं बनें...

एक राजा सायंकाल में महल की छत पर टहल रहा था, अचानक उसकी दृष्टि महल के नीचे बाजार में घूमते हुए एक संत पर पड़ी। संत तो संत होते हैं, चाहे हाट बाजार में हों या मंदिर में अपनी धुन में खोए चलते हैं। राजा ने महूसस किया वह संत बाजार में इस प्रकार आनंद में भरे चल रहे हैं जैसे वहां उनके अतिरिक्त और कोई है ही नहीं। न किसी के प्रति कोई राग दिखता है न द्वेष, मानो उनकी दृष्टि में संसार है ही नहीं। राजा अच्छे संस्कार वाले और भगवद्भक्त थे। संत की यह मस्ती इतनी भा गई कि तत्काल उनसे मिलने को व्याकुल हो गए। उन्होंने सेवकों से कहा कि इन संत से मिलने में एक पल की देर भी उन्हें पीड़ित कर रही है, इन्हें तत्काल लेकर आओ। सेवकों को कुछ न सूझा तो उन्होंने महल के ऊपर-ऊपर से ही रस्सा लटका दिया और उन संत को उसमें फंसाकर ऊपर खींच लिया।

चंद मिनटों में ही संत राजा के सामने थे, राजा ने सेवकों द्वारा इस प्रकार लाए जाने के लिए संत से क्षमा मांगी। संत ने सहज भाव से क्षमा कर दिया और पूछा ऐसी क्या शीघ्रता आ पड़ी महाराज जो रस्सी में ही खिंचवा लिया। राजा ने कहा- एक प्रश्न का उत्तर पाने के लिए मैं अचानक ऐसा बेचैन हो गया कि आपको यह कष्ट हुआ। संत मुस्कुराए और बोले- ऐसी व्याकुलता थी अर्थात कोई गूढ़ प्रश्न है, बताइए क्या प्रश्न है। राजा ने कहा- प्रश्न यह है कि भगवान् शीघ्र कैसे मिलें, मुझे लगता है कि आप ही इसका उत्तर देकर मुझे संतुष्ट कर सकते हैं? कृपया मार्ग दिखाएं। संत ने कहा? राजन! इस प्रश्न का उत्तर तो तुम भली-भांति जानते ही हो, बस समझ नहीं पा रहे। दृष्टि बड़ी करके सोचो तुम्हें पलभर में उत्तर मिल जाएगा। राजा ने कहा? यदि मैं सचमुच इस प्रश्न का उत्तर जान रहा होता तो मैं इतना व्याकुल क्यों होता और आपको ऐसा कष्ट कैसे देता, मैं व्यग्र हूं। आप संत हैं, सबको उचित राह बताते हैं। मुझे भी मार्ग दिखाएं। मेरी बुद्धि के बंद दरवाजे खोलें और इसका उत्तर देकर मेरी जिज्ञासा शांत करें।

राजा एक प्रकार से गिड़गिड़ा रहा था और संत चुपचाप सुन रहे थे जैसे उन्हें उस पर दया ही न आ रही हो। फिर बोल पड़े सुनो अपने उलझन का उत्तर। संत बोले- सुनो, यदि मेरे मन में तुमसे मिलने का विचार आता तो कई अड़चनें आतीं और बहुत देर भी लगती। मैं आता, तुम्हारे दरबारियों को सूचित करता, वे तुम तक संदेश लेकर जाते। तुम यदि फुर्सत में होते तो हम मिल पाते और कोई जरूरी नहीं था कि हमारा मिलना सम्भव भी होता या नहीं। परंतु जब तुम्हारे मन में मुझसे मिलने का विचार इतना प्रबल रूप से आया तो सोचो कितनी देर लगी मिलने में? तुमने मुझे अपने सामने प्रस्तुत कर देने के पूरे प्रयास किए। इसका परिणाम यह रहा कि घड़ी भर से भी कम समय में तुमने मुझे प्राप्त कर लिया। यदि भगवान के मन में विचार आ जाए कि आज मैं भक्त से मिलकर आता हूं तो फिर उनके लिए इस कार्य में देर कितनी लगेगी। वह तो पलक झपकने से भी कम समय में संसार के किसी कोने में उपस्थित हो सकते हैं। तो हम भगवान को खोजें उससे उचित नहीं कि भगवान ही हमें खोजते आ जाएं।

राजा यह सुनकर विस्मय में पड़ गया, भगवान क्यों खोजने आने लगे मनुष्य को! ऐसा भी कहीं होता है भला! लगता है संत महाराज आज आपे में नहीं है। फिर भी राजा ने धैर्य नहीं छोड़ा और प्रश्न किया। राजा ने पूछा- परंतु भगवान के मन में हमसे मिलने का विचार आए तो कैसे आए और क्यों आए? संत बोले- तुम्हारे मन में मुझसे मिलने का विचार कैसे आया? राजा ने कहा? जब मैंने देखा कि आप एक ही धुन में चले जा रहे हैं और सड़क, बाजार, दुकानें, मकान, मनुष्य आदि किसी की भी तरफ आपका ध्यान नहीं है, उसे देखकर मैं इतना प्रभावित हुआ कि मेरे मन में आपसे तत्काल मिलने का विचार आया। संत बोले-यही तो तरीका है भगवान को प्राप्त करने का राजन्! ऐसे ही तुम एक ही धुन में भगवान की तरफ लग जाओ, अन्य किसी की भी तरफ मत देखो, उनके बिना रह न सको, तो भगवान के मन में तुमसे मिलने का विचार आ जायगा और वे तुरंत मिल भी जायेंगे।

भगवान तो सुपात्रों के पास आकर स्वयं मिलने और उनसे सुख-दुख बांटने को बेचैन रहते हैं, इंसान उस योग्य बना ही नहीं पाता स्वयं को। उस संत ने थोड़े शब्दों में सारी भक्ति-भाव का निचोड़ निकाल कर रख दिया। जिसने सृष्टि बनाई वह क्या अकेलापन महसूस नहीं कर लेगा जब इसी सृष्टि को भोगने वाला कोई ऐसा न मिले जो उनसे उनकी रचना की चर्चा कर सके। आप कोई घर बनाते हैं तो उसे देखने वालों, रहने वालों सभी से घर बनाने में आई बाधाओं से लेकर उसकी सुंदरता तक की छोटी-बड़ी बात की चर्चा कितने प्रेम से करते हैं। क्या भगवान की यह इच्छा नहीं होती होगी। उन्हें भी तो इस सृष्टि में से ही साथी चाहिएअपने हृदय की बात कह सुन सकें, पर ईश्वर तो यह बात उसी से करेंगे जो इसके योग्य स्वयं को बनाए।

■ प्रस्तुति : हेमन्त शर्मा

कोरोना महामारी से सबसे अधिक नुकसान किसी का हुआ है तो वो है साहित्य जगत का

हमारी ने साहित्य जगत के एक नायाब शायर, गीतकार आदरणीय डॉ. कुंवर बैचेन जी को अपने जाल में फंसा सदा के लिए हमसे छीन कर चिरनिद्रा में सुला दिया है। हृदय व्यथित है क्योंकि आज मैंने न केवल एक संवेदनशील, सहृदय, चिंतनशील और लोगों से अगाध स्नेह रखने वाले मेरे बड़े भाई समान व्यक्तिव को खोया है बल्कि एक सच्चे गुरु और विवेकशील गुणी साहित्य साधक को भी खोया है। देश के प्रसिद्ध कवि एवं शायर आदरणीय डॉ. कुंवर बैचेन जी आज के दौर के लिखने वाले सभी कवियों और साहित्यकारों के लिए एक सूरज के समान थे जिसकी रोशनी में साहित्य जगत के कवि एवं शायर रूपी अनेकों तारे टिमटिमाते रहते थे क्योंकि उनकी लेखनी और व्यक्तिव दोनों ही प्रेरणादायक थे।

ये मेरा सौभाग्य रहा कि मैं व्यक्तिगत रूप से भी उनके सानिध्य में रहा और देश भर में आयोजित कई कवि सम्मेलनों और काव्य के कार्यक्रमों में उनके साथ काव्य पाठ करने का मुझे अवसर प्राप्त हुआ। उनकी लेखनी बेजोड़, प्रभावशाली और अतुलनीय थी और उनके गीतों और शायरी ने मुझे सदा प्रभावित किया है। उनके निधन की ख़बर सुनकर दिल को बहुत ठेस पहुंची और आखों से अश्रु बह निकले। पर क्या करें काल के आगे किसकी चली है इसलिए मैंने अपनी पंक्तियों में ये कहा है कि-

मौत तो यारो सुनो सबको ही आनी है,
सब की जिंदगी की आख़िरी कहानी है,
इक दिन आनी है नहीं टाली जानी है,
रब की ये कड़वी अटल पर वाणी है।

दोस्तो, हिंदी ग़ज़ल और गीत के महत्वपूर्ण हस्ताक्षर बड़े भाई साहिब आदरणीय गुरुवर कुंवर बैचेन जी की कलम से निकले नीचे मेरे द्वारा संकलित चंद शेर पढ़िए और उनकी कलम की पैनी धार के दर्शन आप स्वयं कीजिए-

शोर की इस भीड़ में ख़ामोश तन्हाई सी तुम
ज़िंदगी है धूप, तो मद-मस्त पुर्वाई सी तुम

चाहे महफ़िल में रहूं चाहे अकेले में रहूं
गूंजती रहती हो मुझ में शोख़ शहनाई सी तुम

राहों से जितने प्यार से मंज़िल ने बात की
यूं दिल से मेरे आप के भी दिल ने बात की

हो के मायूस न यूं शाम से ढलते रहिए
ज़िंदगी भोर है सूरज से निकलते रहिए

ये लफ़्ज़ आइने हैं मत इन्हें उछाल के चल
अदब की राह मिली है तो देख-भाल के चल

बड़ा उदास सफ़र है हमारे साथ रहो
बस एक तुम पे नज़र है हमारे साथ रहो

कोई रस्ता है न मंज़िल न तो घर है कोई
आप कहियेगा सफ़र ये भी सफ़र है कोई

अपनी सियाह पीठ छुपाता है आइना
सब को हमारे दाग़ दिखाता है आइना

आज जो ऊंचाई पर है क्या पता कल गिर पड़े
इतना कह के ऊंची शाख़ों से कई फल गिर पड़े

सुनो अब यूं ही चलने दो न कोई शर्त बांधो
मुझे गिर कर सँभलने दो न कोई शर्त बांधो

उंगलियां थाम के ख़ुद चलना सिखाया था जिसे
राह में छोड़ गया राह पे लाया था जिसे

उनका कहा ये शेर जो उन्होंने मौत पर ही कहा है-

मौत तो आनी है फिर मौत का क्यूँ डर रखूं,
जिन्दगी आ तेरे कदमों पर मैं अपना सर रखूं।

उनके इस शेर से ही पता चलता है कि वो कितने जिंदादिल इंसान थे और जिंदगी से कितना प्रेम रखते थे। ऐसे अनुपम व्यक्तिव और जिन्दादिल शायर, गीतकार को मैं अपनी विनम्र और अश्रुपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

■■ नरेश मलिक

भक्तराज अमींचन्द जी

अमींचन्द्र जी
पुण्यतिथि : 29 जुलाई

पश्चिमी पंजाब (अब पाकिस्तान में) के झेलम जनपद ने भारतभूमि व मानव-समाज को समय-समय पर कई महान विभूतियां देकर इतिहास में नये-नये अध्याय जोड़े हैं। बहुत पुराने समय की बात यदि हम न करें तो भी इसी युग में इसी झेलम जनपद ने सत्यनिष्ठ, वेदप्रिय, वीर-विप्र, रक्तसाक्षी पं. लेखरामजी को जन्म दिया। इसी धरती ने भारतीय स्वाधीनता संग्राम के वीर योद्धा हुतात्मा खुशीराम को जन्म दिया। वीर खुशीराम ने अंग्रेजी साम्राज्य से जुझते हुए सीने पर सात गोलियां खाकर वीरगति पाई। इसी झेलम की धरती ने प्रखर क्रांतिकारी भाई बालमुकंद को जन्म दिया। सती माता रामरखी इसी धरती की देन थी। भाई परमानंद को जन्म देने का अभिमान भी इसी झेलम जनपद को है।

इन पुण्यात्माओं के अतिरिक्त इस क्षेत्र ने एक और नररत्न को जन्म दिया। वे थे श्री अमींचन्द जी। आपका जन्म झेलम जिले की पिंडदादनखां तहसील के हिरणपुर ग्राम में हुआ। आप मोहियाल कुल में जन्मे। आपका गोत्र बाली था। मोहियाल ब्राह्मण बहुत बीर होते हैं। सैनिक स्वभाव के यो लोग सेना व पुलिस में ऊंचे-ऊंचे पदों को सुशोभित करते आए हैं। ये लोग सुशिक्षित व बुद्धिमान भी बहुत होते हैं। अमींचन्द जी को बाल्यकाल से ही संगीत में विशेष रुचि रही। इस कारण इनका संगत बिगड़ गयी। मीरासियों व वेश्याओं की संगत से इनमें वे सब दोष आ गये जो मनुष्य को पतनोन्मुख कर देते हैं। आचार्य चमूपति जी ने भक्त जी की संक्षिप्त जीवनी में ठीक ही लिखा है- गानविद्या पर यह दैव का अत्याचार है कि यह विद्या दुराचारियों के हाथ जा पड़ी है। अमींचन्द गान रस का रसिया था। यही रस उसे दुराचारियों में ले गया और उनमें ऐसा फंसाया कि वहीं तन्मय कर दिया। मांस खाता, मद्य गीता और दिन-रात दुर्व्यसनियों को कुसंगति में रहता। उस युग में पंजाब में उर्दू का ही बोलबाला था। अमींचन्द भी उर्दू-फारसी के अच्छे ज्ञाता थे, परंतु उनके भजनों से यह पता चलता है कि उन्हें हिंदी का भी अच्छा ज्ञान था। संस्कृत का भी कुछ अध्ययन किया।

ये चुंगी के दरोगा बने और फिर स्थानापन्न तहसीलदार की पदवी प्राप्त हुई। उस काल के भारतीयों के लिए इस पद पर पहुंच जाना बड़ा सम्मानास्पद था। एक सेठ के गुमाशते से मिलकर वस्तुआं का अनुचित भाव लिख दिया। इससे उस गुमाशते को बहुत अधिक राशि मिलने की सम्भावना थी। ये सब कुछ हेरफेर ही तो थी। श्री अमींचन्द जी व तहसीलदार दोनों लपेट में आ गये। आपको त्यागपत्र देना पड़ा। तहसीलदार को तो कारावास का दंड भोगना पड़ा। सेठजी ने अमींचन्द जी को चालीस रुपये की बजाए साठ रुपये मासिक की नौकरी दे दी। धर्मवीर पं. लेखरामजी ने लिखा है कि अमींचन्द ने झेलम में दयानंद जी के उपदेशामृत का पान किया, परंतु आर्यसमाज के इतिहास के एक मर्मज्ञ विद्वान पं. विष्णुदत्त जी एडवोकेट तथा आचार्य चमूपति जी ने लिखा है कि एक डाक्टर अमींचन्द जी को गुजरात ले गये। वहीं आपने ऋषि के दर्शन किये और ऋषि दरबार में भजन गाये। वहां ऋषि जी ने कहा, 'है तो हीरा, परंतु कीचड़ में पड़ा है।' बस ऋषि के इस कृपाकटाक्ष से, इस एक वाक्य में अमींचन्द की काया ही पलट गई। वह आर्यसमाज का सभासद् बन गया।

जीवन परिवर्तन की घटना गुजरात की है। झेलम में अमींचन्द जी की ससुराल थी। उन्होंने वही कुछ भूमि ले ली। वही रहने लगे। दस वर्ष तक वहां आर्य-समाज के विभिन्न पदों को सुशोभित किया। मृत्यु के समय वे आर्यसमाज के प्रधान थे। पहले वे दीन वेदान्ती थे। इसलिए उनके भजनों में कहीं-कहीं संसार की असारता पर अधिक बल दिया गया है। पहले वे गजलें लिखा करते थे, अब भजन लिखने लगे। उनके गले में विशेष रस था। श्रोता उनके सरस भजनों को उन्हीं के मुख से सुनकर भावविभोर होकर झूम उठते थे।

आर्यसमाजों के वार्षिकोत्सवों पर उनके भजनोंपदेश की तत्कालीन पत्रों के सम्पादकों ने भूरि-भूरि प्रशंसा की है। मृत्यु से पूर्व उन्होंने अपनी सर्वसम्पत्ति दान में देने का मृत्यु-पत्र लिख दिया था, परंतु उनकी इस अंतिम इच्छा का पालन नहीं किया गया। 29 जुलाई 1893 को आपका निधन हुआ। समस्त आर्यजगत में आपकी मृत्यु का शोक मनाया गया। आपके जीवन में ऋषिजी के एक ही करुणा-कटाक्ष से जो परिवर्तन आया, वह कल्याण-मार्ग के प्रत्येक पथिक के लिए अत्यंत प्रेरक घटना है।

Sharddhananda and Untouchability

Article by- Dr. Vivek Arya

Our country history is full of leaders who are from dalit background and have devoted their life for dalit upliftment but we found rare personalities like Swami Dayanand Saraswati and Swami Sharddhananda ji who were not from dalit background but worked for whole life for dalit upliftment from the platform of Aryasamaj. Swami Dayanand reputed work Satyarth Prakash was first to declare equal rights for lower castes, the right for education, right for reciting Vedic mantras, right for interdinning, right for marriage, right to fetch water from common wells. According to Swami Dayanand ji any caste or Varna was purely based on characteristics not on the basis of birth. Aryasamaj from its beginning propagated this Vedic teaching of Swami Dayanand.

Since his joining politics swami ji was continuously motivating Indian national congress to deal with the problem of untouchability at national level with extensive measures. In his chairman address of Amritsar congress (1919) he strongly expressed his feelings as "Is it not true that so many among you who make the loudest noises about the acquisition of political rights, are not able to overcome their feeling of revulsion for those sixty millions of India who are suffering injustice, your brothers whom you regard as untouchable ? How many are there who take these wretched brothers of theirs to their heart? give deep thought and consider how your sixty million brothers-broken fragments of your own hearts which you have cut off and thrown away- how these millions of children of mother India can well become the anchor of the ship of a foreign government. I make this one appeal to all of you, brothers and sisters.

Purify your hearts with the water of the love of the motherland in this national temple, and promise that these millions will not remain for you untouchables, but become brothers and sisters. Their sons and daughters will study in our schools, their men and women will participate in our societies, in our fight for independence they will stand shoulder-to-shoulder with us, and all of us will join hands to realize the fulfillment of our national goal" Swami Ji difference with Gandhi Ji increased with the passage of time when he draw attention of the congress towards the harassment of Christian chamars by police in environs of Delhi who had accepted Suddhi and returned back to Hinduism by Aryasamaj.

Books first seventy pages dealt with the methods used by Christian missionaries in India. Nearly half of the book was taken up by translations from an article in the theosophist about the nefarious activities of Portuguese missionaries and the inquisition, followed by an indictment of protestant missionary work, in particular that of the Delhi Cambridge mission. Thus nearly ninety percent of the pamphlet was aimed at demonstrating missionaries had always used unfair, immortal and underhand mean. The last ten pages deled with constructive point. Since the untouchables were becoming Christians for other than religious reasons, the way to prevent those happenings was by educating their children, by protecting them from the police, and by helping them to achieve social uplift.

दिव्य प्रकाश !!

जिसके मस्तक पर बिराजता था,
ब्रह्मदेव का दिव्य प्रकाश!
जिसके संबोधन से हिल जाते थे,
धरती और आकाश!

वैदिक संस्कृति का रत्न
वह अनुपम ही व्याख्याता था!
वह स्वामी दयानन्द सरस्वती
भारत का भाग्य विधाता था!

वो दयानन्द योगी-यती
बीज सुख-शांति का बो गये!
निज पिता के प्यारे थे,
वह मां की आंखों के तारे थे!
संन्यास व्रत धारकर,
छोड़ परिवार को चल दिये!

हो रहे थे सभी भारती,
पश्चिमी सभ्यता पर लट्टू!
छोड़ बैठे थे निज धर्म को,
बड़े पंडे पुजारी टट्टू!
ज्ञान का शुभ दीपक जला,
मन के संशय सभी धो गये!
वो दयानन्द योगी...

देश का दीपक बुझने को था,
दुख से जनता परेशान थी!
दयानन्द की उस घड़ी,
मुख पै मन्द मुस्कान थी!
दृश्य देखा ये गुरुदत्त ने,
मन में संशय सभी मिट गये!
वो दयानन्द योगी...

वो दयानन्द योगी मती,
बीज सुख-शांति का बो गये!!

आर्य देवेन्द्र गुप्ता, इंदिरापुरम्, गाजियाबाद

प्रभु से लगन

जरा प्रभु से तू लगन लगा
कि होगा बेड़ा पार तेरा।
कभी दिल ना किसी का दुःखा
कि होगा बेड़ा पार तेरा॥
जरा प्रभु से तू लगन लगा...

इहलौकिक मोहमाया हमें बांधकर रखती,
चमक यहां की दूर प्रभु से है करती।
उठ प्रातःकाल ध्यान लगा कि होगा बेड़ा पार तेरा॥

आत्मा हमारी जानो कभी नहीं मरती,
नश्वर शरीर को ये धारण है करती।
दिव्य ज्ञान का दीप जला कि होगा बेड़ा पार तेरा॥

निष्काम कर्म कर और फल की इच्छा मत रख,
योग द्वारा जीवन को तू सदा ही तपाया कर।
वेद धर्म ने यही है कहा कि होगा बेड़ा पार तेरा॥

हवन यज्ञ करके संवार तू जीवन अपना,
पर्यावरण शुद्ध हो ये था ऋषि का सपना।
मन मन्दिर में ज्योति जगा कि होगा बेड़ा पार तेरा॥

स्वर्ग और नरक सभी यहीं पर हैं दिखते,
'जीव' को सदा ही उसके कर्म फल मिलते ।
'गुप्त' नहीं है कोई भी विधा कि होगा बेड़ा पार तेरा ॥
जरा प्रभु से तू लगन लगा...

विनोद प्रकाश 'गुप्त'

कारगिल विजय दिवस

26 जुलाई पर विशेष

कारगिल विजय दिवस स्वतंत्र भारत के लिये एक महत्वपूर्ण दिवस है। इसे हर साल 26 जुलाई को मनाया जाता है। कारगिल युद्ध लगभग 60 दिनों तक चला और 26 जुलाई को उसका अंत हुआ। इसमें भारत की विजय हुई। इस दिन कारगिल युद्ध में शहीद हुए जवानों के सम्मान हेतु मनाया जाता है।

1971 के भारत-पाक युद्ध के बाद भी कई सैन्य संघर्ष होता रहा। दोनों देशों द्वारा परमाणु परीक्षण के कारण तनाव और बढ़ गया था। स्थिति को शांत करने के लिए दोनों देशों ने फरवरी 1999 में लाहौर में घोषणा पत्र पर हस्ताक्षर किए। जिसमें कश्मीर मुद्दे को द्विपक्षीय वार्ता द्वारा शांतिपूर्ण ढंग से हल करने का वादा किया गया था। लेकिन

पाकिस्तान ने अपने सैनिकों और अर्ध-सैनिक बलों को छिपाकर नियंत्रण रेखा के पार भेजने लगा और इस घुसपैठ का नाम 'ऑपरेशन बद्र' रखा था। इसका मुख्य उद्देश्य कश्मीर और लद्दाख के बीच की कड़ी को तोड़ना और भारतीय सेना को सियाचिन ग्लेशियर से हटाना था। पाकिस्तान यह भी मानता है कि इस क्षेत्र में किसी भी प्रकार के तनाव से कश्मीर मुद्दे को अंतरराष्ट्रीय मुद्दा बनाने में मदद मिलेगी।

प्रारम्भ में इसे घुसपैठ मान लिया था और दावा किया गया कि इन्हें कुछ ही दिनों में बाहर कर दिया जाएगा। लेकिन नियंत्रण रेखा में खोज के बाद और इन घुसपैठियों के नियोजित रणनीति में अंतर का पता चलने के बाद भारतीय सेना को अहसास हो गया कि हमले की योजना बहुत बड़े पैमाने पर किया गया है। इसके बाद भारत सरकार ने ऑपरेशन विजय नाम से 2,00,000 सैनिकों को भेजा। यह युद्ध आधिकारिक रूप से 26 जुलाई 1999 को समाप्त हुआ। इस युद्ध के दौरान 527 सैनिकों ने अपने जीवन का बलिदान दिया।

सभी देशवासियों को 'कारगिल विजय दिवस' की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ अमर शहीदों के चरणों में कोटि-कोटि प्रणाम !!

जरा याद उन्हें भी कर लो, जो लौट के घर न आये.....!!!!

26 जुलाई 1999 का दिन भारत वर्ष के लिए एक ऐसा गौरव लेकर आया, जब हमने सम्पूर्ण विश्व के सामने अपनी विजय का बिगुल बजाया था। इस दिन भारतीय सेना ने कारगिल युद्ध के दौरान चलाए गए 'ऑपरेशन विजय' को सफलतापूर्वक अंजाम देकर भारत भूमि को घुसपैठियों के चंगुल से मुक्त कराया था। इसी की याद में '26 जुलाई' अब हर वर्ष 'कारगिल विजय दिवस' के रूप में मनाया जाता है।

दिल में हौसलों का तेज और, तूफ़ान लिए फिरते हैं।
आसमां से ऊंची हम अपनी, उड़ान लिए फिरते हैं।।

वक्त क्या आजमाएगा, हमारे जोश और जूनून को।
हम तो मुट्ठी में अपनी, जान लिए फिरते हैं।।

हमसे महफ़ूज़ सरहदे है, हमसे रोशन ये चमन।
हमसे खुशियों कि बारातें, और कायम चैनों अमन।।

हम वतन के पहरेदार... दुश्मनों के लिए दीवार ....
सर पे कफ़न होंठों पे भवानी, नाम लिए फिरते है।
हम तो मुट्ठी में अपनी, जान लिए फिरते हैं।।

हमारी वतन परस्ती, चंद रुपयों की मोहताज नहीं।
खरीद सके जो ईमान को, कोई ऐसा तख्तों ताज नहीं।।
हम भारत मां के वीर सपूत... सैन्य शक्ति के अग्रदूत....
अपनी बन्दूखों में दुश्मनों का, अंजाम लिए फिरते है।
हम तो मुट्ठी में अपनी, जान लिए फिरते हैं।।

मात देते अपने साहस से, दुश्मन की हरेक चाल को।
तिलक करते अपने लहू से, भारत मां के भाल को।।

है अदम्य साहस का प्रकाश...नहीं किसी तमगे की आस,
अपनी शहादत पर भी सैकडों, सलाम लिए फिरते हैं।
हम तो मुट्ठी में अपनी, जान लिए फिरते हैं।।

झांसी की अधीश्वरी वीरांगना लक्ष्मीबाई

स्व राज्य की रक्षा में अपना सर्वस्व निछावर कर देने वाली महारानी लक्ष्मीबाई के जीवन की स्मृतियों का स्मरण कर प्रत्येक देशप्रेमियों का मन पुलकित हो उठता है। उनकी जीवनी से हम इस बात की प्रेरणा ग्रहण करते हैं कि यदि स्वराज्य पर कभी आंच आये या उसका गौरव संकट में हो, तो हम अपना सर्वस्वार्पण करके उसकी रक्षा करें।

महारानी लक्ष्मीबाई भारतीय इतिहास में उस वीरता और विश्वास की पहचान हैं, जिनका चरित्र पवित्रता और आत्मोत्सर्ग के पुण्यशील विचारों पर अवलम्बित हैं। उन्होंने निर्भयतापूर्वक राज्य का रथ चलाया और युद्ध क्रांति के क्षेत्र में उतरकर यह भी सिद्ध किया कि स्वराज्य के गौरव को बचाना केवल पुरुषों का ही नहीं अपितु स्त्रियों का भी कर्तव्य है। मृत्यु के समय उनकी अवस्था 22 वर्ष 7 महीने और 27 दिन की थी। यह अवस्था ऐसी है, जिसमें वह देश की आजादी, उसे स्वतन्त्र कराने और उसके लिए मर-मिटने की भावना से परे हटकर अपने सुख, ऐश्वर्य और मनोविनोद को प्रधानता देकर आराम से अपना जीवनयापन कर सकती थीं।

महान् साम्राज्ञी के सामने देश का वह मानचित्र और वे परिस्थितियां थीं, जिनमें भारतीयों को 'नेटिव' कहकर उनके साथ पशुत्वपूर्ण व्यवहार किया जाता था, उनकी धार्मिक भावनाओं को कुचला जाता था, उन्हें बौद्धिक तथा शारीरिक रूप में पंगु बनाकर निष्क्रिय और निस्तेज बना दिया जाता था।

वामपंथी इतिहाकारों के अभिमतानुसार 1857 की जनक्रांति अपने-अपने स्वार्थों की रक्षा का परिणाम था और कुछ प्रभावशाली व्यक्तियों का तत्कालीन शासन के विरुद्ध षड्यंत्र था। जबकि यदि ऐसा होता तो यह क्रान्ति देशव्यापी न होकर केवल कुछ क्षेत्रों एवं कुछ रियासतों तक ही सीमित रह जाती। लेकिन 1857 की जनक्रांति में जनता अपनी शक्ति के बल पर मिटने को तैयार हुई और अपनी अखंड एकता तथा बल-पौरुष का परिचय अंग्रेजों को दिया। जहां जनता के लिए स्वाभिमान और स्वत्वों का प्रश्न था, वैसा ही उस समय के रजवाड़ों और पूर्व शासकों के सामने भी यही एक भाव था कि उनके साथ मानवीय व्यवहार किया जाए व शासक होने के नाते उनके अधिकारों के प्रति आंखें न मींच ली जाएं।

महारानी लक्ष्मीबाई युद्धशिक्षा में पारंगत, मन से दृढ़ और कर्म से तेजस्वी क्षत्रिया थीं। उनका जन्म काशी के अस्सीघाट मोहल्ले में 21 अक्टूबर, 1835 को मोरोपंत तांबे के घर हुआ। आरम्भ से ही लक्ष्मीबाई को ऐसा वातावरण मिला, जिसने उन्हें स्वराज्य के प्रति निष्ठावान और उसकी स्वतन्त्रता के लिए निरत होने का लगन लगा दिया। अपने पति राजा गंगाधरराव के जीवनकाल में ही वह अपनी बुद्धिमत्ता और शासकीय क्षमता का परिचय देती रहती थीं। झांसी राज्य का शासनतन्त्र अंग्रेजों के इशारों पर चल रहा है, यह बात उन्हें जरा भी नहीं भाई। लेकिन उस समय शासनतन्त्र के सम्पर्क में न होने के कारण वह अपनी भावना को पी गईं। उसी समय लार्ड डलहौजी ने समस्त देशी रियासतों को अंग्रेजी शासन में मिलाने का एक षड्यन्त्र रचा। पुत्र गोद लेने की प्रचलित प्रथा को भी समाप्त कर दिया। उन्हीं दिनों राजा गंगाधर राव बीमार पड़े। उन्होंने झांसी के उस समय के अंग्रेजी प्रबंधक श्री एलिस को बुलाकर उनके सामने ही एक लड़का गोद लिया तथा श्री एलिस ने शपथबद्ध होकर कहा कि वह रानी और गोद लिए हुए बच्चे पर कभी अंग्रेजी हुकूमत की टेढ़ी दृष्टि नहीं पड़ने देंगे। लेकिन गंगाधर की मृत्यु के पश्चात् एलिस का यह वचन पानी के बुदबुदे की तरह समाप्त हो गया। एलिस ने रानी को दरबार में जाकर सरकारी फरमान सुनाया कि रानी का दत्तक पुत्र अस्वीकार किया गया और वह पांच हजार रुपये माहवार की पेंशन लेकर झांसी अंग्रेजों को सौंप दे। अंग्रेजों द्वारा यह अपमान और विश्वासघात महारानी के शरीर में विष की तरह बिंध गई। उन्होंने गरजकर कहा- 'मैं अपनी झांसी नहीं दूंगी।'

महारानी की इस घोषणा में उस युग का प्रतिनिधित्व था, जिसमें अन्याय के जाल को बराबर अंग्रेजों द्वारा फैलाया जाता था और जिसके नीचे सर्व साधारण सिसक उठा था। बचपन के संस्कार ने रानी के मन में प्रेरणा दी और उन्होंने शासन की कमान को अपने हाथों में ले लिया। झांसी में जनता द्वारा अंग्रेजों का कत्लेआम आरम्भ हो गया। हो सकता था कि यदि महारानी का जरा-सा भी संकेत जनता को मिल जाता तो अंग्रेज लोग मौत के घाट उतार दिए जाते। लेकिन महारानी का संघर्ष, उसका विद्रोह और उसका पराक्रम अन्याय के विरुद्ध था।

■■ प्रियांशु सेठ

समाचार - सूचनाएं

- 16 जून महाराणा प्रताप जयंती। 18 जून रानी लक्ष्मीबाई जयंती। 21 जून योग दिवस ऑनलाइन तरीके से आर्य समाज आर्ष गुरुकुल में मनाया गया।
- 4 जुलाई स्वामी विवेकानन्द पुण्यतिथि।
- 19 जुलाई क्रांतिकारी मंगल पांडे जयंती।
- 23 जुलाई क्रांतिकारी योद्धा चंद्रशेखर आजाद जयंती।
- 23 जुलाई लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक जयंती।
- 26 जुलाई कारगिल विजय दिवस।
- 29 जुलाई अमीचन्द भक्तराज पुण्यतिथि।
- 31 जुलाई अमर शहीद ऊधम सिंह स्मृति नमन।
- आर्य समाज बी-69, सेक्टर-33 नोएडा का प्रथम ऑनलाइन गूगल सत्संग 30 मई 2021 से प्रारम्भ किया गया। जिसमें सुमधुर भजन संगीता आर्या द्वारा प्रस्तुत किये गये। आचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार जी द्वारा सारगर्भित उद्‌बोधन किया गया।
- दूसरा ऑनलाइन गूगल सत्संग 6 जून 2021 को आयोजित किया गया। जिसमें श्री दिनेश आर्य 'पथिक' और संगीता आर्या द्वारा भजनों की प्रस्तुति की गई। आचार्य डॉ. जयेन्द्र जी द्वारा पवित्र वेदमंत्र की व्याख्या की गई।

सुविचार

पितामह भीष्म के जीवन का एक ही पाप था कि उन्होंने समय पर क्रोध नहीं किया और जटायु के जीवन का एक ही पुण्य था कि उसने समय पर क्रोध किया। परिणामस्वरूप एक को बाणों की शैय्या मिली और एक को प्रभु श्री राम की गोद। अर्थात क्रोध भी तब पुण्य बन जाता है जब वह धर्म और मर्यादा की रक्षा के लिए किया जाए और सहनशीलता भी तब पाप बन जाती है जब वह धर्म और मर्यादा की रक्षा ना कर पाये।

कालजयी रचना है 'सत्यार्थ-प्रकाश'

स्वामी दयानन्द ने देश में रूढ़ियों, कुरीतियों, आडम्बरों, पाखण्डों आदि से मुक्त एक नए स्वर्णिम समाज की स्थापना के उद्देश्य से 10 अप्रैल, सन 1875 (चैत्र शुक्ल, प्रतिपदा संवत् 1932) को गिरगांव मुम्बई व पूना में 'आर्य समाज' की स्थापना की। 24 जून, 1877 को संक्राति के दिन लाहौर में 'आर्य समाज' की स्थापना हुई, जिसमें आर्य समाज के दस प्रमुख सिद्धान्तों को सूत्रबद्ध किया गया। ये सिद्धांत आर्य समाज की शिक्षाओं का मूल निष्कर्ष हैं। उन्होंने सन् 1874 में अपने कालजयी ग्रन्थ 'सत्यार्थ-प्रकाश' की रचना की। वर्ष 1908 में इस ग्रन्थ का अंग्रेजी अनुवाद भी प्रकाशित किया गया। इसके अलावा उन्होंने हिन्दी में 'ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका', 'संस्कार-विधि', 'आर्याभिविनय' आदि अनेक विशिष्ट ग्रन्थों की रचना की। स्वामी दयानंद सरस्वती ने 'आर्योद्देश्यरत्नमाला', 'गोकरुणानिधि', 'व्यवाहरभानू' 'पंचमहायज्ञविधि', 'भ्रमोच्छेदल', 'भ्रान्तिनिवारण' आदि अनेक महान ग्रन्थों की रचना की। विद्वानों के अनुसार, कुल मिलाकर उन्होंने 60 पुस्तकें, 14 संग्रह, 6 वेदांग, अष्टाध्यायी टीका, अनके लेख लिखे।

लेखकों से अपील : अपनी रचना, लेख, कविता आदि भेजते समय ध्यान रखें कि लिखावट साफ-सुथरी हो व लेख कागज के एक ओर हाशिया छोड़ते हुए लिखें। लेख के हर पृष्ठ पर नम्बर व हस्ताक्षर करें, साथ ही 5 रुपये की डाक टिकट लगा लिफाफा भेजना न भूले अन्यथा लेख, रचना लौटा पाना संभव नहीं हो पाएगा। अपना पूरा नाम, फोन, पता अवश्य लिखें। सभी लेख, रचना प्रबंध संपादक 'विश्ववारा संस्कृति' आर्य समाज भवन, बी-69, सेक्टर-33, नोएडा के पते पर भेंजे।

पाठकों से अपील : आर्य समाज नोएडा की यह पत्रिका 'विश्ववारा संस्कृति' आपको कैसी लगी, इसके बारे में अपने विचार प्रबंध संपादक 'विश्ववारा संस्कृति' बी-69, सेक्टर-33, नोएडा के पते पर भेंजे। आपकी प्रतिक्रिया से ही हमें सम्बल मिलेगा तथा हम पत्रिका को और उपयोगी बनाने का प्रयास करेंगे। हमें आपके पत्रों का बेसब्री से इन्तजार रहेगा।

प्रबंध संपादक, 'विश्ववारा संस्कृति', आर्य समाज, बी-69, सेक्टर-33, नोएडा (उ.प्र.) मोबाइल : 9871798221, 7011279734

शुल्क सूचना : आदरणीय सदस्यों से निवेदन है कि आपकी प्रिय मासिक पत्रिका 'विश्ववारा संस्कृति' मानवीय जीवन मूल्यों की संरक्षक पत्रिका निरंतर प्रकाशित हो रही है और आप तक समय पर पहुंच रही है।

आपने सदस्यता ग्रहण करके वैदिक संस्कृति के प्रचार-प्रसार हेतु जो सहयोग प्रदान किया तदर्थ धन्यवाद! कुछ सदस्यों का मासिक सदस्यता शुल्क जनवरी 2019 को समाप्त हो गया है, फिर भी पत्रिका निरंतर प्रेषित की जा रही है। अधिक समय तक शुल्क न मिलने पर पत्रिका का प्रेषण करना संभव नहीं हो पाएगा। **अतः आपसे निवेदन है कि अपना शुल्क भेजकर सहयोग प्रदान करें।**

चैक/मनीआर्डर 'आर्यसमाज' के नाम भिजवाएं अथवा आप लोग सीधे ही 'पंजाब नेशनल बैंक', नोएडा सेक्टर-33 में खाता संख्या A/C No. 1483010100282, IFSC- PUNB0148320 में जमा करा कर रसीद की प्रतिलिपि निम्न पते पर भेजें।

प्रबंध संपादक, 'विश्ववारा संस्कृति', आर्य समाज, बी-69, सेक्टर-33, नोएडा (उ.प्र.) मोबाइल : 9871798221, 7011279734

अंधविश्वास छोड़ें कर्मशील बनो

बात वर्षों पुरानी है। मेरे गृहनगर जींद से संबंधित है। जींद शहर में एक मंदिर है सत्यनारायण जी का मंदिर। उस मंदिर के समीप एक मेरे परिचित ने धार्मिक पुस्तकों, मूर्तियों, पूजा सामग्री आदि की दुकान खोली। मैं उत्सुकतावश उनसे मिलने गया। उनकी दुकान में अनेक प्रकार की सामग्री रखी थीं जैसे रुद्राक्ष माला, श्री लक्ष्मी कवच, फेंग सुई आदि। मैंने उनसे कुछ के लाभ पूछे। उन्होंने बड़ी उत्सुकता से बताये। श्री लक्ष्मी कवच के लाभ बताते हुए उन्होंने बताया कि इससे धन-लक्ष्मी आती है। मैंने तत्काल उत्तर दिया आपके पास तो 10-20 आसानी से आपकी दुकान में हैं। आपके ऊपर तो कुछ ही दिनों में धन की वर्षा हो जानी चाहिए। वे मुस्कुरा दिए और कुछ नहीं बोले। बात आई गई हो गई। 6-7 महीने बाद मेरा उनसे फिर से बाजार में मिलना हुआ।

कुछ उदास थे। मैंने उदासी का कारण पूछा। बोले दुकान नहीं चली। इसलिए बंद कर दी। मैंने सांत्वना दी। कोई अन्य कार्य करने का सुझाव दिया। मैं मन ही मन यही सोचता रहा 10-20 श्री लक्ष्मी कवच दुकान में रखने से भी इनका भला नहीं हुआ। फिर जो लोग एक दो लेकर जाते है। उनका क्या भला होगा?

जब भी आप बस या रेलगाड़ी में बैठतें है तो आपको वहां पर कुछ पर्चे लगे हुए मिलेंगे जिन पर लिखा हुआ मिलेगा बंगाली खान बाबा या रहमान मिया आदि। उन पर सांई बाबा की फोटो भी दिखाई देगी और उस पर आगे लिखा मिलेगा- गृह क्लेश, प्यार में नाकामी, बच्चे पैदा ना होना, परीक्षा में फेल होना, मूठ करनी, वशीकरण आदि के लिए सम्पर्क करें।

यही से शुरू होता है आपकी बर्बादी का खेल। कुछ औरतें उन नंबर्स पर फोन मिलाती हैं और सामने से आवाज़ आती है अस्सलाम-आले-कुम। फोन करने वाली औरत बोलती है कि मुझे अपने पति और सास को काबू में करना है। मुस्लिम तांत्रिक बोलता है की इस कार्य के लिए आपको अजमेर या अन्य बताई जगह पर आना पड़ेगा। फोन करने वाली औरत तय स्थान पर पहुंच जाती है। मुस्लिम तांत्रिक संबंधित औरत से पूछता कि पति क्या कार्य करते हैं? औरत जवाब देती है कि वे एक बड़े व्यापारी है या बड़ी नौकरी पर हैं।

तांत्रिक यही से बर्बादी की कहानी शुरू कर देता है। वह संबंधित औरत से बीस हजार के करीब रुपये मांग लेता है और उस औरत को अगले सप्ताह फिर आने को बोल देता है। वह औरत अगले सप्ताह फिर उसके पास पहुंच जाती है। वह औरत से पूछता है कि क्या वह अपने पति को बता कर आई है? औरत ना में जवाब देती है। इसी मौके का फायदा उठाकर वह तांत्रिक संबंधित औरत का शारीरिक शोषण करता है। उसे अपने चंगुल से बाहर निकलने ही नहीं देता। उसे आगे डराता है कि उसके घर में कोई बड़ा अपशकुन होने वाला है, इसके लिए उस औरत को किसी गाय की पूंछ या कान काटने के लिए बोल देता है और वह औरत यह पाप कर बैठती है।

अब आपको क्या करना है? जब भी आप बस या रेलगाड़ी में बैठे तो वहां लगे 'रहमान मियां' आदि के पर्चे फाड़ दे ताकि किसी बहन, बेटी की जिंदगी बर्बाद होने से बच सके। हो सकता है कि अगला शिकार आप ही हो या आपकी कोई रिश्तेदार औरत हो।

बात छोटी सी है। मगर संदेश बड़ा है। हिन्दू समाज पुरुषार्थ करने के स्थान पर, गीता में योगेश्वर श्रीकृष्ण जी द्वारा कर्म करने के सन्देश के स्थान पर, वेदों में कर्मशील होने के सन्देश के स्थान पर जादू-टोना, कवच यन्त्र, तांत्रिक क्रिया, पूछा-टेवा, जन्मपत्री, गुरुमंत्र आदि से अपना भला सिद्ध करने का प्रयास करने लगा हैं। यही इसके आध्यात्मिक जगत में पिछड़ने का सबसे बड़ा कारण है। 1200 वर्ष, मुसलमानों और ईसाईयों ने हिंदुओं की बड़ी दुर्गति की हैं। मगर उससे भी नहीं सीखे। कोई लक्ष्मी कवच, कोई तंत्र-मंत्र काम नहीं आया।

महाराणा प्रताप और शिवाजी सरीखे महान योद्धाओं ने भी अपने बाहुबल और बुद्धि से सफलता प्राप्त की थी। न की अंधविश्वास से। आशा है उन महान और पवित्र आत्माओं से प्रेरणा लेकर, आत्मचिंतन कर आप सभी सत्य को स्वीकार करेंगे।

■■ डॉ. विवेक आर्य

कोरोना मरीजों को दिल के इलाज की अनदेखी घातक

अस्पताल में भर्ती हुए कोविड मरीज अक्सर दिल की बीमारियों को नजरअंदाज कर देते हैं। एक ताजा रिसर्च से पता चला है कि दिल की बीमारी का इलाज नहीं होने से कोविड रोगियों के मरने की आशंका लगभग पांच गुना अधिक हो जाती है।

अध्ययन में कोविड रोगियों को पहले चरण के इजेक्शन अंश के साथ दिखाया गया है। इसके तहत बाएं वेंट्रिकुलर इजेक्शन अंश का एक माप जब तक कि अधिकतम वेंट्रिकुलर संकुचन का समय 25 फीसद से कम हो तो मरीज की मौत की आशंका पांच गुना अधिक बढ़ जाती है।

टीम ने यह भी पाया कि समान जोखिम वाले कारकों के समान अनुपात वाले जिनके पास कोविड नहीं था, उनमें प्रथम-चरण अस्वीकृति अंश के निम्न मान थे। यह पता चलता है कि दिल को नुकसान पुरानी पूर्व-मौजूदा स्थितियों के कारण हो सकता है। इसे कोविड संक्रमण का परिणाम नहीं माना जा सकता है। ये दावा शोधकताओं ने किया है।

लंदन में सेंट थॉमस अस्पताल में कार्डियोवस्कुलर क्लिनिकल फार्माकोलॉजी के प्रोफेसर फिल चिवेंस्की ने कहा, परंपरागत रूप से, हृदय का कार्य इजेक्शन अंश द्वारा मापा जाता है, या हृदय के प्रत्येक संकुचन के साथ बाएं वेंट्रिकल पंप से कितना रक्त निकलता है। उन्होंने कहा, प्रथम चरण का इजेक्शन अंश, दिल के कार्य का एक नया माप है, जो पारंपरिक इजेक्शन अंश उपायों की तुलना में दिल के शुरुआती, अनिर्धारित क्षति के प्रति अधिक संवेदनशील लगता है। इस रिसर्च के नतीजे पत्रिका हाइपरटेंशन में प्रकाशित हुए हैं।

कार्डियोवस्कुलर रिस्क फैक्टर और बीमारी को कोविड जोखिम कारकों के रूप में मान्यता दी गई है जो कि सार्स-कोव -2 महामारी के शुरुआती दिनों में रोगी के परिणामों पर उच्च नकारात्मक प्रभाव डालते हैं। शोधकताओं ने परिकल्पना की है कि हृदय की विफलता की पूर्वानुभूति अस्पताल में भर्ती मरीजों में कोविड के अधिक गंभीर मामलों से जुड़ी होगी।

ऐसे रोगियों के मरने की आशंका पांच गुना ज्यादा

हाइपरटेंशन पत्रिका में प्रकाशित अध्ययन में हुआ खुलासा

कोविड रोगियों पर परीक्षण : इस मामले में रिसर्च करने वाली टीम ने चीन के वुहान में 129 हॉस्पिटलाइज्ड कोविड रोगियों और दक्षिण लंदन में 251 हॉस्पिटलाइज्ड कोविड रोगियों के लिए फरवरी और मई 2020 के बीच मृत्यु दर का विश्लेषण किया है।

प्रोफेसर फिल चिवेंस्की ने कहा निष्कर्ष बताते हैं कि अगर हम पहले चरण के इजेक्शन अंश इमेजिंग का उपयोग करके पता लगाए गए हृदय को होने वाली बहुत पुरानी क्षति को रोक सकते हैं, तो लोगों को कोविड जैसे श्वसन संक्रमण से बचने की अधिक संभावना होगी। इसके अलावा स्वस्थ जीवन शैली विकल्प, बेहतर उपचार, उच्च रक्त चाप और उच्च कोलेस्ट्रॉल के उपचार भी महत्वपूर्ण हैं।

रोटरी क्लब नोएडा में 11 कुंडीय यज्ञ आचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार जी के ब्रह्मत्व में संपन्न हुआ।
यज्ञ में गणमान्य यजमान और अनेक हस्तियां शामिल हुईं।

घोषणा पत्र संख्या : 153/2016-17 पंजीकरण संख्या : UPMUL/2016/76974 Postal Registration No.- UP/GBD- 249/2020-2022 Date of Dispatch 12 Every Month

ओ३म्

स्वराज्य के प्रथम उद्घोषक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती

जब स्वराज्य का मंदिर बनेगा तब उसमें सबसे ऊंचा स्थान महर्षि दयानन्द का होगा

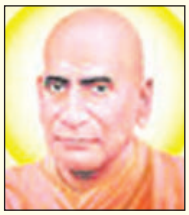

- महर्षि दयानन्द पहले राष्ट्र पुरुष थे जिन्होंने देशवासियों को पूर्ण स्वराज्य प्राप्ति की प्रेरणा दी। इन्होंने कहा था- 'कोई कितना भी करे लेकिन स्वदेशी राज्य ही सर्वोपरि उत्तम होता है।'
- हम और आपको अति उचित है कि जिस देश के पदार्थों से अपना शरीर बना, अब भी पालन होता है, आगे होगा, उसकी उन्नति तन, मन, धन से सब जने मिलकर प्रीति से करें।
- किसी संस्कृत ग्रन्थ व इतिहास में नहीं लिखा कि आर्य लोग ईरान से आए और यहां के जंगलियों से लड़कर जय पाके तत्काल इस देश के राजा हुए, पुनः विदेशियों का लेख माननीय कैसे हो सकता है?
- जब से विदेशी मांसाहारी इस देश में आ के गौ आदि पशुओं के मारने वाले, मद्यपायी राज्याधिकारी हुए हैं (भारतीयों) के दुखों की बढ़ती होती जाती है।

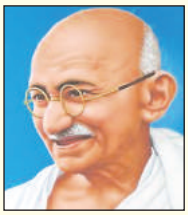

स्वामी श्रद्धानंद सरस्वती
(1856-1926)
सत्य को ही अपना ध्येय बनाएं और दयानन्द को अपना आदर्श बनाएं

महात्मा गांधी
(1869-1948)
मैं जैसे-जैसे आगे बढ़ता हूं वैसे-वैसे मुझे महर्षि दयानन्द का मार्ग दिखाई देता है

सुभाष चन्द्र बोस
(1897-1945)
आधुनिक भारत के आद्य निर्माता तो महर्षि स्वामी दयानन्द ही हैं

लाल बहादुर शास्त्री
(1904-1966)
महर्षि ने स्वदेशी और स्वराज्य की ऐसी लहर चलाई जिससे इंडिया नेशनल कांग्रेस की पृष्ठभूमि बन गई

शहीद भगत सिंह
(1907-1931)
महारे विचार तथा मानसिक विकास अधिकांश आर्यसमाज की देन है

लाला लाजपत राय
(1865-1928)
महर्षि मेरे गुरु हैं, मुझे स्वतंत्रता पूर्वक विचारना, बोलना और कर्तव्य पालन करना सिखाया

शहीद रामप्रसाद बिस्मिल
(1897-1927)
आर्य समाज मेरी मां है और महर्षि दयानन्द मेरे गुरु हैं

सरदार बल्लभ भाई पटेल
(1875-1950)
भारत की स्वतंत्रता की नींव रखने वाले वास्तव में स्वामी दयानन्द ही थे

श्यामजी कृष्ण वर्मा
(1857-1930)
मैंने जो प्राप्त किया है उसमें सबसे बड़ा हाथ उस युगदृष्टा महर्षि का है

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक
(1856-1920)
स्वराज्य और स्वदेशी का सर्वप्रथम मंत्र प्रदान करने वाले जाज्वल्यमान नक्षत्र थे दयानन्द

ओ३म् **विश्ववारा संस्कृति** ओ३म्
आर्य समाज, बी-69, सेक्टर-33, नोएड़ा (उ.प्र.) दूरभाष : 0120-2505731, 9871798221